MASTER - 1981

Year 1981

1 Set

जनवरी 1981

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान
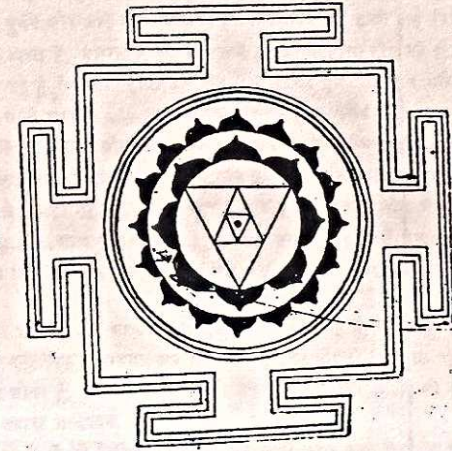
सम्पादक

कैलाश चन्द्र श्रीमाली

K. M. Srivastav
Holinagar ...
[illegible]

विषय-सूची

वर्ष १, अंक १

जनवरी ८१

संपादक

कैलाश चन्द्र श्रीमाली

पत्र व्यवहार हेतु पता :

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान"

डॉ. श्रीमाली मार्ग : हाई कोर्ट

कोलोनी, जोधपुर, ३४२००१

(राजस्थान)

टेलीफोन-२२२०६

आ नो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वत :

मानव जीवन को सर्वतोन्मुखी उन्नति उर्ध्वमुखी प्रगति और भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

※

प्रार्थना

उद्वयं तम सस्परि स्वः

पश्यन्त उत्तरम् ।

देवं देवत्रा सूर्य मगन्म

ज्योति रुत्तमम् ।।

यजुर्वेद २०-२१

अज्ञान रूपी अन्धकार से निरन्तर प्रकाश की ओर बढ़ते हुए हम महातेजस्वी सूर्य के समान उत्तम ज्योतिर्प्रकाश अर्थात् सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त करें।

※

※

सुना है कि....

❋ आबू पर्वत से आठ कीलो मीटर दूर बाबा अभेदानन्द ने सूर्य साधना सम्पन्न की, तथा ग्यारह लाख लोम-विलोम मंत्र जप के बाद सूर्य मंत्र ॐ तच्चक्षुर्दे वहितं पुरस्ता.... से बिना स्पर्श किये अग्नि प्रज्जवलित कर यज्ञ पुरश्चरण सम्पन्न किया।

❋ खुरई के (सागर) साधक श्री श्रीवास्तव ने 'तारा साधना, सम्पन्न की, और उसी रात उन्हें सिरहाने पांच हजार के नये नोट प्राप्त हुए, जो कि उनके लिए आश्चर्य जनक घटना थी, उन पर पांच हजार का ही कर्जा था।

❋ अमेरिका से प्रकाशित 'नेक्स्ट' पत्रिका ने संसार के सभी अणु विशेषज्ञ एवं युद्ध विशेषज्ञों से राय प्राप्त कर कम्प्यूटर से जो आंकड़े प्राप्त किये हैं, वे चौका देने वाले हैं। ज्ञातव्य है कि विश्व में युद्ध सामग्री से सम्बन्धित विवरणों के लिए यह पत्रिका पूर्ण प्रामाणिक और विश्वसनीय मानी जाती है, आंकड़े इस प्रकार हैं :

निकट भविष्य में भारत और पाकिस्तान के बीच अणु युद्ध संभव है, इसमें जीत भारत की होगी।

या अरब और इजराइल के बीच अणु युद्ध संभव है, जिसमें इजराइल की जीत होगी, पर वह स्वयं बरबाद हो जायगा।

❋ देश के प्रसिद्ध तांत्रिक बोधानन्द जी ने नवरात्रि में कामाख्या-साधना सम्पन्न करने के बाद बताया कि-१७ मई १९८३ का दिन विश्व के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि इस दिन निश्चत रूप से विश्व युद्ध होगा और यह युद्ध अरब भूमि से प्रारंभ होगा।

❋ २६ दिसम्बर से दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन होने जा रहा है, जिसमें भारत के अलावा अमेरिका, जापान, लंका आदि देशों के ज्योतिषी भी भाग लेंगे।

❋ शुद्ध वेदोक्त गायत्री मंत्र २४ अक्षर का माना गया है जिसमें ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः तीन प्रणव हैं तथा त्रिपाद गायत्री है, पर गणना करने पर २३ अक्षर ही मिलते हैं, इसमें रहस्य यह है कि यह मंत्र लिखने में 'वरेण्यम' लिखा जाता है, जबकि उच्चारण में 'वरेणियम्' होता है, इस प्रकार 'णि' अक्षर पूर्ण उच्चारण होने से २४ अक्षर माने जाते हैं।

❋ उत्तर काशी से १४ कीलो मीटर दूर जंगल में प्रख्यात हठयोगी बगहटानन्द सूर्य त्राटक सिद्ध कर रहे हैं, वे सूर्योदय से छः घंटे तक बिना पलक झपकाये सूर्य की तरफ एकटक देखते रहते हैं। इससे उनकी त्राटक-क्षमता बहुत बढ़ गई हैं, पिछले दिनों दिल्ली में उन्होने मात्र नेत्र शक्ति से एक इंच मोटी लोहे की सलाख को पूरी तरह से मोड़कर यह सिद्ध कर दिया था कि त्राटक से कुछ भी संभव किया जा सकता है।

❋ जापान के एक ज्योतिषी ने आकाशीय ग्रहस्थिति से बताया है कि जिस जन्म कुण्डली में मंगल केन्द्र में होता है, उसके जीवन में स्वास्थ्य माता-पिता का सुख तथा स्त्री-सुख में न्यूनता रहती है।

❋ उज्जेन का महाकालेश्वर मंदिर द्वादश ज्योतिर्लिगों में से एक है, मन्दिर से जुड़ा हुआ प्रसिद्ध सरोवर है, एक तपस्वी ने रहस्योद्घाटन किया है कि तालाब में डुबकी लगाकर यदि 'नमः शिवाय' का उच्चारण किया जाय तो ध्वनि पूरी स्पष्टता से महाकालेश्वर शिवलिंग में से निकलती हुई सुनाई देती है। ×

—×—

शाश्वत स्वर

... परम तेजस्वी चक्रवर्ती सम्राट करोड़ों स्वर्णमुद्राएं व जवाहरातों से भरे थाल महर्षि याज्ञवल्क्य के सामने रखते हुए निवेदन किया, महाराज! इस विशाल राज्य, अक्षय सम्पत्ति एवं अतुलनीय सम्पदा से भी गुरुतर कुछ है क्या?

... मुनिवर मुस्कराये, बोले–है, हैहय! अगर तुलना की जाय तो शिष्य को दिये जाने वाले मंत्र के सामने तेरी यह सम्पदा तुच्छ है, व्यर्थ है ... क्यों कि एक छोटे से मंत्र से, उसके अनुष्ठान एवं प्रभाव से इतनी सम्पदा तो पैदा की जा सकती है, पर इस सम्पत्ति-सम्पदा से मन्त्र नहीं खरीदा जा सकता, इन हीरे-जवाहरातों से अनुष्ठान का मर्म, मंत्र का रहस्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।

....मन्त्र तंत्र यंत्र हमारे जीवन का आधार हैं, भारत वर्ष के प्राणों की रस संजीवनी है हमारे पुरखों की थाती है. जिसे संभालकर रखना हमारा धर्म है, जिसे जीवित बनाये रखना हमारा कर्तव्य है, जिसे बढ़ाना, चतुर्दिक प्रसारित करना हमारा ऋण से उऋण होना है, जो ऋण पूर्वजों का हमारे ऊपर है।

... और यदि समय रहते हमने ध्यान नहीं दिया, अपने स्वार्थ और भौतिकता के कीचड़ में ही डूबे रहे, तो भारतवर्ष की यह अमूल्य अद्वितीय सम्पदा नष्ट हो जायगी, काल के गर्त में विलीन हो जायगी, ज्ञान की यह संजीवनी धारा बीच रेगिस्तान में ही विलुप्त हो जायगी और यदि यह सब हमारे जीवित रहते, हमारी आंखों के सामने हुआ तो कलंक का यह टीका हमेशा हमेशा के लिये हमारे सिर पर लग जायगा, हमारे पूर्वज, हमारी इस लापरवाही तथा स्वार्थ परता पर सिर धुनेंगे, और आने वाली पीढ़ियां हमें धिक्कारेगी कि हमने उन्हें विशिष्ट ज्ञान से वंचित कर दिया।

... ठीक है हम व्यस्त हैं, जरूरत से ज्यादा उलझे हुए हैं, बेतहाशा दौड़ रहे हैं....कुछ पता नहीं हम क्यों दौड़ रहे है? किधर दौड़ रहे हैं? क्या होगा इस दौड़ से........पर हम लगातार अविराम दौड़ते चले जा रहे हैं.... धीरे धीरे चुक रहे हैं अपने आप में........समाप्त होते जा रहे हैं स्वयमेव ही........और अंतिम क्षण....ठीक अंतिम क्षण जब हमारे सामने आयेगा, और वह अंतिम क्षण जब हमसे पूछेगा....क्या किया मानवता के लिए? धर्म संस्कृति सभ्यता के लिए कितना समय दिया तूं ने, तब हमारे पास क्या उत्तर होगा?

....अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है....अब तक तो समय है। इस भाग दौड़ में एक क्षण के लिये रुक कर निर्णय कीजिए, कि कुछ क्षण.... – मात्र कुछ क्षण . ....भारतीय संस्कृति के लिये, हमारे देश की धरोहर मन्त्र तन्त्र यन्त्र की उन्नति-उत्थान के लिये भी दूंगा, लोगों को प्रेरित करूंगा....उन्हें परिचित कराऊंगा, इसके माध्यम से जन सेवा में हाथ बंटाऊंगा।

... यह पत्रिका इस घटाटोप अन्धकार में एक छोटी सी किरण है, एक लघु-लघु दीपक है जो शक्तिभर जलता रहेगा, जब तक सूर्य नहीं निकल जायगा, तब तक यह शक्तिभर रोशनी बिखेरता रहेगा।

....पर इसकी सीमा है, इसे आपके सहारे की जरूरत है, आपकी छोटी सी मदद इसके लिए प्राणवेत्ता होगी, इसके लिए आपका सहारा आवश्यक है।

...मैं कुछ नहीं हूं, मैं तो निमित्त मात्र हूं, जब चारों तरफ गहन घटाटोप अन्धकार देखा तो एक छोटा सा दिया बाल बैठा हूं, इसका आधार, इसका जीवन तो आप सब है, आप प्रयत्न करें, यदि प्रत्येक पाठक एक-एक ग्राहक और बना दे तो यह दीर्घ जीवी हो सकेगा, केवल कहने से नहीं, यह देखें कि वह पत्रिका का सदस्य बन गया या नहीं, तभी विश्राम लें, और इन सबके लिए यह दीपक आपसे कितने समय की याचना कर रहा है....मात्र पांच मिनट की....सिर्फ कुछ क्षणों की।

....यह पत्रिका आपकी है, आने वाले समय में यदि मन्त्र तन्त्र इसके माध्यम से जीवित रह सके तो उसका श्रेय आपको होगा, मेरा सबल, मेरा सहारा, मेरा विश्वास तो आप हैं.. ....आप ही के भरोसे यह कठिन कार्य हाथ में ले बैठा हूं....... ....देखता हूं कौन कौन अपने हस्ताक्षर इस पत्रिका के भविष्य-ललाट पर अंकित करने में पहल करते हैं।

✤

....सम्पादक

दुर्लभ प्राप्य सामग्री

दिन का प्रारम्भ गुरु स्मरण से हो :

हमारा प्रत्येक दिन हमारे लिये एक नया जीवन है। रात्रि के बाद जब व्यक्ति जागता है तो वह एक नया जीवन लेकर उठता है। शास्त्रों में लिखा है कि जीवन का प्रारम्भ और जीवन का अन्त गुरू-स्मरण से होना चाहिए, इसी प्रकार हमारे दिन का प्रारम्भ और अवसान गुरू स्मरण से ही उचित है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में बताया गया है कि किसी भी प्रकार की पूजा साधना, उपासना तब तक व्यर्थ हैं जब तक कि जीवन में गुरू न हो। महाभारत के शान्ति पर्व में बताया गया है कि किसी भी प्रकार की पूजा आदि के समय अपने दाहिने हाथ की ओर गुरु का आसन बिछा देना चाहिए और यह भावना मन में लानी चाहिए कि मेरे पास गुरु बैठे हैं और उनके निर्देशन में ही मैं पूजा, साधना, अनुष्ठान, व्रत, उपवास या कोई भी कार्य सम्पन्न कर रहा हूं।

विष्णुपुराण में बताया गया है कि जब तक गुरु का आसन बिछाकर गुरुस्तवन न किया जाय तब तक किसी भी पूजा या साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती।

साधक चाहे पुरुष हो या स्त्री, प्रत्येक के जीवन में गुरु का महत्व और स्थान आवश्यक है। उसे चाहिए कि वह प्रातः उठते समय गुरू-स्तवन करे इसके बाद ही दैनिक कार्य में प्रवृत्त हो।

वशिष्ठ ने कहा है कि स्नानादि से निवृत्त होकर साधक या गृहस्थ आसन पर बैठ जाय, अपने दाहिनी ओर गुरु का आसन बिछा ले उस पर गुरु की कल्पना करे या उसका चित्र अथवा मूर्ति हो तो अपने सामने रखे और निम्न गुरू पाठ करे इसके बाद ही अन्य किसी प्रकार की पूजा, व्रत, साधना या अनुष्ठान आदि सम्पन्न करे।

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वरपादुकाभ्यो
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः॥ १॥

ऐंकारह्रींकाररहस्ययुक्त—
श्रींकारगूढार्थमहाविभूत्या
ॐकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥ २॥

होत्राग्निहौत्राग्निहविष्यहोतृ—
होमादिसर्वाकृतिभासमानम्।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥ ३॥

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां
विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्यां
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥ ४॥

अनतसंसारसमुद्रतार—
नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥ ५॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

मयूरेशस्तोत्र: चिन्ता एवं रोग निवारण हेतु दुर्लभ स्तोत्र :

जो सुमिरत सिधि होई गन नायक करिबन बदन ।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥
(मानस १ - १ सो०)

शास्त्रों में कहा गया है कि भगवान गणपति समस्त विघ्नों को नाश करने वाले, कार्यों में सिद्धि देने वाले तथा जीवन में पूर्णता देने वाले हैं, इसीलिये, "कलौ चण्डो विनायकौ" कहा गया है, अर्थात् कलियुग में दुर्गा, एवं गणेश ही पूर्ण सफलता देने में सहायक हैं।

विश्व के समस्त साधक इस बात पर एक मत हैं कि प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिये सर्वप्रथम गणपति का ध्यान या उनकी पूजा आवश्यक है। देवताओं में भी गणपति की पूजा को सर्व प्रथम स्वीकार किया है, यही नहीं अपितु भगवान शिव ने भी कार्य की सफलता के लिये सबसे पहले गणपति की साधना को आवश्यक बताया है।

यों तो गणपति से सम्बन्धित सैकड़ों, हजारों स्तोत्र है. परन्तु उनमें "मयूरेश-स्तोत्र" का महत्व सर्वोपरि है, यह स्तोत्र अपने आप में चैतन्य और मंत्रसिद्ध है, अतः इसका पाठ ही पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

घर में आने वाली बाधाओं, बच्चों के रोग निवारण घर में सुख-शान्ति, उन्नति तथा प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये 'मयूरेश स्तोत्र' को सर्व श्रेष्ठ माना गया है, इन्द्र ने स्वयं इस स्तोत्र के द्वारा गणपति को प्रसन्न कर विघ्नों पर विजय प्राप्त की थी।

इस स्तोत्र का पाठ पुरुष और स्त्री समान रूप से कर सकते हैं, हमारे जीवन में प्रत्येक दिन का प्रारम्भ मयूरेश स्तोत्र से होना चाहिए।

पूजा विधि :

सर्वप्रथम साधक को स्नान कर आसन पर बैठ जाना चाहिए, आसन ऊनी या सूती वस्त्र का हो सकता है, साधक को पूर्व की तरफ मुँह करके बैठना चाहिए, अपने सामने गणपति की मूर्ति या तस्वीर स्थापित कर देनी चाहिए। इस प्रकार की पूजा या साधना किसी भी बुधवार से प्रारम्भ की जा सकती है।

सबसे पहले साधक या साधिका को भक्तिपूर्वक गणपति को प्रणाम करना चाहिए और निम्न ध्यान करना चाहिए :

सर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥

सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतरजठरं हस्तपद्मैर्दधानं
दन्तं पाशांकुशेष्टान्यु रुकरविलसद्बीजपूरा भिरामम् ।
बालेन्दुद्योतमौलिं करिपतिवदनं दानपूरार्द्रगण्डं
भोगीन्द्रा बद्धभूषं भजत गणपतिं रक्तवस्त्रांगरागम् ॥

तत्पश्चात् गणपति के बारह नामों का स्मरण करना चाहिए जिससे कि हम जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें, यात्रा पर रवाना होते समय या प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व भी इन बारह नामों का स्मरण करना सिद्धिदायक माना गया है :

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्ष्यो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशं तानि नामानि य पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

इसके बाद गणपति की पूरी पूजा होनी चाहिए। देवताओं के षोडश पूजन में निम्नलिखित उपचार माने गये है :

(१) आवाहन, (२) आसन, (३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमनीय, (६) स्नान, (७) वस्त्र, (८) यज्ञोपवीत (९) गंध, (१०) पुष्प (दूर्वा), (११) धूप, (१२) दीप, (१३) नेवैद्य, (१४) तांबूल, १५) प्रदक्षिणा (१६) पुष्पांजली।

सावधानियां :

१– गणपति की पूजा में तुलसी पत्र का प्रयोग सर्वथा निषिद्ध है।

२– गणपति को दूर्वादल अत्यन्त प्रिय है।

३– अर्घ्य में जल के अतिरिक्त निम्न आठ वस्तुएं होती है
(१) दही, (२) दूर्वा, (३) कुशाग्र, (४) पुष्प, (५) अक्षत, (६) कुंकुम, (७) पीली सरसों और (८) सुपारी।

इन आठ वस्तुओं को एक पात्र में लेकर गणेशजी को अर्घ्य दिया जाता है।

४– जिन पदार्थों का अभाव हो उसके स्थान पर अक्षत का प्रयोग किया जाना चाहिए।

–५ सभी देवताओं को पुष्प प्रिय हैं परन्तु निम्न प्रकारेण पुष्प निषिद्ध हैं।

(क) जो कीड़ों से दूषित हो।
(ख) बासी हो।
(ग) पेड़ से या पौधे से नीचे गिरे हुए हों।
(घ) अधखिले पुष्प सर्वथा वर्जित है।
(च) देवता पर चढ़ा हुआ, बांये हाथ में रखा हुआ, पहनी हुई धोती के पल्ले में लाया हुआ अथवा जल से धोया हुआ पुष्प भी त्याज्य होता है देवता लोग ऐसे पुष्प ग्रहण नहीं करते।
(छ) पुष्प देवता पर चढ़ाते समय अधोमुख नहीं होना चाहिये।
(ज) फूल तोड़ने का काम स्नान से पूर्व करना चाहिए तथा तुलसी दल का चयन स्नान के बाद उचित है।
(झ) फूल को वस्त्र या हाथ में न लाकर पात्र विशेष में लाना चाहिये।
(ट) शुष्क और अपवित्र पुष्प पूजा में सर्वथा त्याज्य है।
(ठ) कुशा या दूर्वा से देवता पर जल छिड़कना पाप मय माना जाता है ऐसा जल वज्रपात तुल्य माना गया है।

गणपति की पूर्ण पूजा कर साधक को चाहिए कि वह 'मयूरेश स्तोत्र' का पाठ करे। यह स्तोत्र समस्त प्रकार की चिन्ताओं तथा परेशानियों को दूर करने वाला, समस्त प्रकार के भौतिक सुख, आर्थिक व्यापारिक उन्नति, व्यापार में लाभ, राज्य कार्य में विजय, तथा समस्त उपद्रवों का नाश करने में पूर्णतः समर्थ है।

स्त्री या बालक भी स्तोत्र का पाठ कर सकते हैं, किसी भी वर्ण या जाति का व्यक्ति इस पाठ को श्रद्धा पूर्वक कर सकता है. स्त्रियों को चाहिए कि वह रजस्वला दिन से सात दिन तक गणपति पूजन न करे, सात दिनों तक स्त्री पूजन कार्य या मांगलिक कार्य में अशुद्ध मानी जाती हैं।

गणपति की पूजा में सुगन्धित द्रव्य तथा घी का दीपक विशेष महत्वपूर्ण है। साधक को चाहिए कि वह नित्य अपने पूजा कार्य में इस स्तोत्र को सम्मिलित कर ले तथा सर्वप्रथम गणपति पूजन एवं मयूरेश स्तोत्र का पाठ करे, गायत्री स्मरण भी इसके बाद किया जाना चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं कि यह स्तोत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण त्वरित सफलतादायक, विघ्नों, बाधाओं, और कठिनाइयों को दूर करने में समर्थ तथा रोग निवारण, सफलता, और जीवन में समस्त प्रकार के भौतिक सुविधाओं को प्रदान करने में समर्थ एवं सर्वश्रेष्ठ है।

चिन्ता एवं रोग-निवारण के लिये

मयूरेशस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच

पुराण पुरुषं देवं नाना क्रीडाकरं मुदा ।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम् ।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया ।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि विभ्रतम् ।
नानायुधधरं भक्त्वा मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
इन्द्रादिदेवतावृन्देरभिष्टुतमहर्निशम् ।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरे विभुम् ।
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम् ।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम् ।
समष्टिव्यष्टिरूप त्वां मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकर शुचिम् ।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम् ।
अनन्त विभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम् ।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम् ॥
कारागृह गतानां च मोचनं दिनसप्तकात् ।
आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम् ॥

आरोग्य

यों तो वर्तमान जीवन में लाखों प्रकार की बीमारियां हैं और लाखों प्रकार की औषधियाँ भी है। इस स्तम्भ में बीमारियों या दवाओं का विवरण नहीं है, अपितु कुछ ऐसी दुर्लभ और गोपनीय औषधियों का विवरण होगा जो कि अन्यत्र संभव नहीं है। लेखक वर्षो तक दुर्लभ योगियों साधुओं और सन्यासियों के सम्पर्क में रहा है और उनसे कई ऐसी दुर्लभ औषधियों का ज्ञान हुआ है जिनका उल्लेख किसी भी चिकित्सा-ग्रन्थ में संभव नहीं है।

यह स्तम्भ प्रत्येक गृहस्थ के लिये अनुकूल रहेगा और वे इस प्रकार से अपने परिवार और समाज का कल्याण कर सकेगें, इसी भावना को ध्यान में रखकर समय-समय पर गोपनीय और दुर्लभ औषधियों का विवरण दिया जायगा।

१–खांसी कई कारणों से व्यक्ति को खांसी हो जाती है और खांसते-खांसते उसका बुरा हाल हो जाता है। इसके लिये एक महात्मा ने सरल औषधि बताई थी जो कि इस प्रकार है–

नागरवेल के पत्ते (सामान्यतः इसे पान कहते हैं) पर फिटकरी पका कर उसका चूर्ण नागरवेल के पत्ते पर रखकर उसे मुंह में दबा लें और उससे जो रस या लार बने उसे बाहर नहीं थूके अपितु गले के नीचे उतारता रहे। एक या दो बार प्रयोग करने पर खांसी पूरी तरह से समाप्त हो जाती है।

२–पीलिया

नींबू के दो टुकड़े कर दें तथा उसमें से बीज निकाल दें फिर कटे हुए नींबू पर फिटकरी को पकाकर उसको पीस कर जो पाउडर बने उसे उस कटे हुए नींबू पर तब तक डालता रहे जब तक कि नींबू का रस उसे सोखता रहे जब सोखना बन्द कर दे तब उस नींबू को मुंह से पूरी तरह चूस ले। इस प्रकार एक दो बार करने से पीलिया रोग समाप्त हो जाता है। ■

अद्भुत चमत्कारी बजरंग बाण

महावीर हनुमान शारीरिक शक्ति के प्रतीक हैं, वे अतुलनीय पराक्रमी, बलवान और साहसी हैं तथा कलियुग में उनकी साधना पूर्णतः फलदायक है, हनुमान जी दुष्ट शक्तियों और जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाले हैं, उनकी शारीरिक शक्ति के सामने विपरीत परिस्थितियां और बाधाएं उसी प्रकार दब जाती है जिस प्रकार पर्वत के नीचे छोटा सा तिनका दबकर समाप्त हो जाता है।

हनुमान, बजरंग, महावीर, के साथ साथ उन्हें 'वायु-पुत्र' भी कहा जाता है। महाभारत युद्ध में अर्जुन ने अपनी ध्वजा पर उनके चिन्ह को अंकित कर वायु अर्थात प्राणों पर विजय प्राप्त की थी इसीलिये उनको 'वायुपुत्र' कहा जाता है। प्राणों पर अर्थात् चंचल चित्त पर विजय प्राप्त करने के लिये, और मन को पूर्णतः नियंत्रण करने के लिये भी हनुमान साधना सर्वोपरि मानी गई है, जिस व्यक्ति का पूजा या साधना में ध्यान नहीं लगता हो उसके लिये हनुमान-उपासना अत्यन्त महत्वपूर्ण कही गई है, इनकी कृपा से मन और प्राण स्थिर होते हैं तथा साधना शक्ति के साथ-साथ साधक की मनः शक्ति भी बढ़ जाती है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक 'जुंग' के अनुसार मानव की नैतिक भावनाओं का स्रोत उसका मन होता है क्योंकि मन से ही गुप्त शक्तियों का विकास होता हैं, अतः मानव जिन भावनाओं या विचारों को बार बार मन में दोहराता है या जिस प्रकार की मानसिक स्थिति में वह रहता है, उसका वैसा ही स्वभाव बन जाता है, अतः बजरंग बाण में पूरी श्रद्धा रखकर इसे बार बार दोहराने से मानव-मन में हनुमान जी की शक्तियों का विकास होने लगता हैं और मन की संकल्प शक्ति में वृद्धि होती है, साथ ही साथ कष्टों, बाधाओं और परेशानियों से जूझने की शक्ति जागृत होती है, फलस्वरूप उसमें निर्भीकता और साहस आ जाता है।

सैकड़ों पुस्तकों में 'बजरंग बाण' के महत्त्व को बताया गया है, सैकड़ों लोगों का व्यक्तिगत अनुभव है कि बजरंग बाण का नियमित पाठ बाधाओं और आने वाली कठिनाइयों को दूर करने में पूर्णतः सक्षम हैं। मांत्रिक-तांत्रिक क्षेत्र में भी इस स्तोत्र का महत्व माना गया है, ऊंचे से ऊंचे साधक और योगियों ने भी एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि यह स्तोत्र स्वयं ही मंत्रमय है और इसका नित्य पाठ ही अपने आप में आश्चर्यजनक सफलता देने वाला हैं।

शारीरिक व्याधि, घर में भूत–प्रेत आदि की बाधाएं मानसिक परेशानियां, आदि के निवारण में यह स्तोत्र रामबाण की तरह है, जिसके घर में इसका नित्य पाठ होता है उसके घर में साक्षात् महावीर विराजमान रहते है और किसी प्रकार की कोई बाधा उसके घर में व्याप्त नहीं होती।

पूजा कैसे करें ?

साधक को चाहिए कि वह अपने सामने हनुमान जी का चित्र या उनकी मूर्ति रख ले और पूरी भावना तथा आत्मविश्वास से उनका मानसिक ध्यान करें, यह विचार करे कि हनुमानजी की दिव्य और बलवान शक्तियां मेरे मन में प्रवेश कर रही हैं मेरे चारों और के अणु–उत्तेजित हो रहे हैं और यह सशक्त वातावरण मुझे और मेरी मनः शक्ति को बढ़ाने में सहायक हो रहा है। धीरे धीरे इस प्रकार का अभ्यास करने से साधक के मन में शक्ति का स्रोत खुलने लगता है और एकाग्रता पर उसका

नियंत्रण होने लगता है, जब ऐसा अनुभव हो तब बजरंग बाण की सिद्धि समझनी चाहिए।

इसके बाद हनुमानजी की मूर्ति या तस्वीर की चन्दन, पुष्प, आदि से पूजा करनी चाहिए और श्रद्धायुक्त प्रणाम कर नीचे लिखी स्तुति करनी चाहिए।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं ।
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं ।
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

(श्री रामचरितमानस ५१ श्लोक ३)

अर्थात् जो अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत (सुमेरु के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन (को ध्वंस करने) के लिये अग्निरूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी और श्री रघुनाथजी के प्रिय भक्त हैं, उन पवन पुत्र श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं।

इस प्रकार की स्तुति कर साधक को चाहिए कि वह अपने पास दाहिने हाथ की तरफ एक आसन बिछा दे, जैसा कि शास्त्रों में उल्लिखित है कि जब भी बजरंग बाण का पाठ किया जाता है, श्री हनुमान जी स्वयं आसन पर आकर बैठते हैं।

हनुमानजी की पूजा में इत्र, सुगन्धित द्रव्य एवं गुलाब के पुष्पों का प्रयोग निषिद्ध है, साथ ही साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर बैठे, यदि साधक लाल वस्त्र की लंगोट पहिने तो ज्यादा अनुकूल माना गया है।

शास्त्रों के अनुसार स्त्रियों को बजरंग-बाण का पाठ नहीं करना चाहिए परन्तु वे हनुमानजी की मूर्ति या तस्वीर के सामने दीपक या अगरबत्ती लगा सकती हैं, हनुमानजी के सामने तेल का दीपक लगाना चाहिए, और उन्हें गुड़ का भोग लगाना चाहिए।

साधक को चाहिए कि वह बजरंग बाण कंठस्थ कर ले, यों नित्य पाठ करने से यह स्तोत्र स्वतः ही कंठस्थ हो जाता है, प्रातःकाल के अलावा शाम को या रात्रि को सोने से पूर्व भी इस स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है परन्तु जब भी इसका पाठ करे पृथ्वी पर ऊनी वस्त्र का आसन बिछा कर मन में हनुमानजी का ध्यान कर पाठ करें।

यदि साधक यात्रा पर हो तब भी वह रेल में यात्रा के समय इसका पाठ कर सकता है, धीरे-धीरे साधक अनुभव करेगा कि वह पहले की अपेक्षा ज्यादा सशक्त है, विरोधियों पर हावी हो रहा है, उसका मन ज्यादा एकाग्र हो रहा है और उसके पूरे शरीर में एक नई चेतना, एक नया जोश और एक नई शक्ति का प्रादुर्भाव हो रहा है।

बच्चों की नजर उतारने, शान्त और गहन निद्रा के लिये, कष्ट और संकट के समय, रात्रि को अकेले यात्रा करते समय, भूत बाधा दूर करने, तथा अकारण भय को दूर करने के लिए यह स्तोत्र आश्चर्यजनक सफलतादायक है। किसी महत्वपूर्ण कार्य पर जाने से पूर्व भी यदि इसका पाठ किया जाय तो उसे निश्चय ही सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

बजरंग — बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करे सनमान।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्धि करें हनुमान ॥
जय हनुमंत संत — हितकारी।
सुनि लीजै प्रभु विनय हमारी ॥
जन के काज बिलंब न कीजै।
आतुर दौरि महासुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिंधु के पारा।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुरलोका ॥
जाय बिभीषन को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परम-पद लीन्हा ॥
बाग उजारि सिंधु महं बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा ॥
अक्षय कुमार मारि संहारा।
लूम लपेटि लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ॥
अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अंतरजामी ॥
जय जय लखन प्रान के दाता।
आतुर ह्वै दुख करहु निपाता ॥
जय हनुमान जयति बल सागर।
सुर-समूह-समरथ भट-नागर ॥
ॐ हनु हनु हनुमंत हठीले।
बैरिहि मारू वज्र की कीले ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा।
हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा ॥
जय अंजनिकुमार बलवंता।
संकरसुवन बीर हनुमंता ॥
बदन कराल काल कुल घालक।
राम — सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत, प्रेत, पिसाच, निसाचर।
अगनि बेताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारू, तोहि सपथ राम की।
राखु नाथ मरजाद नाम की ॥
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै।
रामदूत धरू मारू धाई कै ॥
जय जय जय हनुमंत अगाधा।
दुख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा।
नहि जानत कछु दास तुम्हारा ॥
बन उपवन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं ॥
जनकसुता - हरि - दास कहावौ।
ता की सपथ, बिलंब न लावौ ॥
जय जय जय धुनि होत अकासा।
सुमिरत होय दुसह दुख नासा ॥
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं।
यहि औसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठ, उठ, चलु, तोहि राम-दोहाई।
पायं परौं, कर जोरि मनाई ॥
ॐ चम चम चम चमचपल चलंता।
हनु हनु हनु हनु हनु-हनुमंता ॥
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल।
सं सं सहमि पराने खल-दल ॥
अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय अनंद हमारो ॥
यह बजरंग - बाण जेहि मारै।
ताहि कहौ फिरि कवन उबारै ॥
पाठ करै बजरंग - बाण की।
हनुमत रच्छा करैं प्राण की ॥
यह बजरंग - बाण जो जापैं।
तासों भूत - प्रेत सब कांपैं ॥
धूप देय जो जपै हमेसा।
ताके तन नहिं रहै कलेसा ॥
उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै, पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान ॥

प्राणायाम : दीर्घ जीवन का रहस्य

प्राण का अर्थ है—ऐसा जीवन तत्व जो ब्रह्माण्ड के साथ ही साथ मानव शरीर में भी व्याप्त हैं। इस प्राण के माध्यम से ही मानव का इस ब्रह्माण्ड से अटूट सम्बन्ध है। प्राण को दूसरे रूप में जीवन कहा गया है। यदि प्राण बंद हो जाते हैं तो यही समझा जाता है कि जीवन समाप्त हो गया है। प्राण की व्याख्या करते हुए शास्त्रों में लिखा है—प्राण यति जीव यति इति प्राणः-अर्थात् जो प्राणी मात्र के जीवन का आधार बन कर रहता है वह प्राण है।

प्राण को नियमित रूप से संचालित करने को प्राणायाम कहा गया है। इसके माध्यम से चंचल और उच्छृंखल मन निर्दिष्ट केन्द्र पर स्थिर होना सीखता है, और जीवन एक सही रूप में नियमित होता है।

श्वास की गति में तीव्रता होने से जीवन का शक्ति-कोष जल्दी समाप्त हो जाता है, दीर्घ जीवन के लिये श्वास की चाल धीमी होनी चाहिए, अमेरिका में इस सम्बन्ध में विद्वान 'श्मित्जर' ने प्रयोग कर बताया हैं कि प्रति मिनट श्वास की चाल और जीवन अवधि का लेखा-जोखा निम्न प्रकार से हैं :—खरगोश प्रति मिनट ३८ बार श्वास लेता हैं और उसकी आयु ८ वर्ष होती है। इसी प्रकार कबूतर श्वास प्रति मिनट ३७, आयु ८ वर्ष। कुत्ता श्वास प्रति मिनट २८, आयु १३ वर्ष। बकरी श्वास, प्रति मिनट २४, आयु १४ वर्ष। मनुष्य श्वास प्रति मिनट १२, आयु १०० वर्ष। हाथी श्वास प्रति मिनट ११, आयु १०० वर्ष। कछुआ श्वास प्रति मिनट ४, आयु १५० वर्ष।

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रति मिनट जितनी कम श्वास ली जाती है आयु उतनी ही अधिक बढ़ जाती है। भूतकाल में मनुष्यों की श्वास प्रति मिनट ११-१२ बार होती थी जो कि अब मनुष्य की प्रति मिनटश्वास १५-१६ तक पहुँच गई है। इसी अनुपात से उसकी आयु भी घट गई है।

जब श्वास की गति बढ़ती है तो तापमान भी बढ़ जाता है। यह बढ़ा हुआ तापमान आयु क्षय करता है। फ्रांस के प्रसिद्ध शरीर विशेषज्ञ जेक्टूर ने बताया है कि इन दिनों मनुष्यों का शारीरिक ताप ९८.६ रहता है। यदि मानव किसी विधि से इस ताप को आधा कर दे अर्थात ४९.०० कर दे तो उसकी आयु आसानी से ५०० वर्ष तक की हो सकती है।

प्राणायाम में गहरी और लम्बी श्वांस लेने का अभ्यास किया जाता हैं। यह अभ्यास व्यक्ति के सामान्य समय में भी हो जाता है अर्थात प्राणायाम का अभ्यास करने वाला व्यक्ति सासान्य जीवन में भी लम्बी और गहरी श्वास लेने का अभ्यस्त हो जाता है। ऐसा होने पर उसका दीर्घ-जीवी होना स्वामाविक है।

सामान्यतः एक मिनट में हमारे फेफड़े १८ बार फूलते सिकुड़ते हैं। और इस प्रकार २४ घंटों में २५,-९२६ बार इसकी पुनरावृति होती हैं। सामान्यतः व्यक्ति उथला श्वास लेता है फलस्वरूप प्रति श्वास के साथ उसके शरीर में ५०० सी.सी. वायु प्रवेश करती है। जबकी एक स्वस्थ शरीर की आवश्यकता पूर्ति के लिये हर श्वास में १२०० सी.सी वायु का उपयोग होना चाहिए। इस प्रकार व्यक्ति हर बार श्वास लेते समय आधे से भी कम वायु प्राप्त करता है। यह आधे पेट भोजन की तरह शरीर को दुर्बल बनाये रखता है और उसके फेफड़े कमजोर हो जाते है जिसकी वजह से क्षय, दमा, खांसी, सीने के अनेक रोग तथा अन्य रोगों की संभावना बनी रहती है।

प्राणायाम के माध्यम से जब गहरी श्वास ली जाती है तो प्रत्येक श्वांस के साथ १२०० से १४०० सी.सी. वायु अन्दर जाती है। प्राणायाय की एक विशेष विधि मासिक है। इसके द्वारा प्रति श्वांस 2000 सी.सी. वायु अन्दर ली जा सकती हैं। इस प्रकार प्राणायाम तथा मासिक के माध्यम से हम पूरी श्वास अपने अन्दर समाहित कर सकते हैं जिसकी वजह से हम आसानी से रोग मुक्त रहकर दीर्घ जीवी बन सकते हैं।

डा मेकडेल के अनुसार गहरी श्वास लेने से फेफड़े ही नहीं अपितु पाचन संस्थना भी परिपुष्ट बनता है। इससे मनुष्य अधिक कार्य करने की क्षमता अपने आप में प्राप्त कर सकता है। और २५९२० बार पूरी हवा अन्दर समाहित करने से उसमे विशेष शक्ति, तेजस्वीता और तारूण्य का संचार होता है। इसका प्रभाव मस्तिष्क पर भी पड़ता है और इससे स्मरण शक्ति की वृद्धि होने के साथ साथ दिन भर मनुष्य तरो ताजा बना रहता हैं।

प्राणायाम को दैवी शक्ति भी कहा गया है। क्योंकि प्रत्येक श्वास के साथ हम आकाश से हवा ही नहीं अपितु आकाश विद्युत भी खींचते हैं। यह विद्युत एक विशेष चेतना युक्त होती है जिसे ईश्वरीय प्रवाह कहा गया है। ऐसा अभ्यास होने पर मानव ईश्वरीय संदेशों को भी सुन सकता है, देख सकता है और समझ सकता है। प्राणायाम हमें समस्त ब्रह्माण्ड की उन सूक्ष्म तरंगों से सम्बन्ध कर सकता है जिसके माध्यम से विश्वव्यापी हलचले होती है और इस प्रकार की विश्व व्यापी तरंगों से सम्बन्ध होने पर सुदूर घटित घटनाओं को हम प्राणायाम के माध्यम से अनुभव कर सकते है।

मोटे तोर पर नाक के श्वास खीचने की, रोकने की तथा छोड़ने की विशेष विधि को प्राणायाम कहते हैं। खींचने को पूरक, रोकने को कुम्भक, तथा छोड़ने को रेचक कहा जाता है। पर इससे ही सब कुछ सम्भव नही है यह एक विशेष विधि है और गुरु के द्वारा ही इस विधि की सुक्ष्मता को भली प्रकार से समझा जा सकता है।

प्राणायाम के अनेको भेद हैं। सामान्यतः ८४ प्राणायामों की चर्चा है, इनमें से शीतली, सीत्कारी, उज्जायी, भस्त्रिका आदि आठ नक्ष प्राणायाम हैं, इन सब के अलग अलग विधान तथा परिणाम हैं। पर यह निश्चित है कि इस प्रकार नियम पूर्वक प्राणायाम करने से शरीर के रोम रोम में प्राण तत्व भर जाते हैं और शरीर सुन्दर, सजीला, बलिष्ठ, तेजस्वी तथा संकल्पयुक्त बन जाता है।

प्रारम्भिक आठ प्रकार के प्राणायाम का अभ्यास हो जाने के बाद प्राण प्रवाह क्रिया सीखी जा सकती है क्योंकि शरीर में प्राण प्रवाह की दस धाराएं मानी गई है। जिनमें पांच नामी प्रवेश से ऊपर की ओर उठती है तथा पांच नीचे की ओर बहती हैं। ऊपर की ओर उठने वाली धाराओं को ऊर्ध्वगामी प्रवाह कहा जाता है। महत्व की दृष्टि से यह विशेष महत्वपूर्ण है और प्राणायाम की विशेष विधि से प्राणों को ऊर्ध्वगामी बना कर कुण्डली जाग्रत की जाती है।

वस्तुतः प्राणायाम प्रत्येक साधक-गृहस्थ के लिये आवश्यक अंग है। इसके द्वारा हमारा स्थूल शरीर आरोग्य वान बनता है, सूक्ष्म शरीर में एकाग्रता पवित्रता तथा संतुलन आता है और इन दोनों शरीरों के समानुपातिक अभ्यास कई सिद्धियों और विभूतियों का द्वार खोल देता है जिससे कि मानव इन चर्म चक्षुओं से भी देवत्व के दर्शन प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर पाता है।

———

सूर्य का सर्व नेत्र रोग हर 'चाक्षुषोपनिषद'

विश्व में समान रूप से सूर्य का महत्व माना गया है और इसे समस्त विश्व में देवता के रूप में स्थापित किया गया है, भारत के अलावा विश्व के अन्य देशों में भी सूर्य के मन्दिर हैं और उनके जीवन में भी सूर्य का बराबर महत्व है।

'चाक्षुषोपनिषद' अत्यन्त गोपनीय और रहस्यपूर्ण मंत्र है, जो कि स्वयं में ही मंत्र सिद्ध है, इसके लिए किसी भी प्रकार से अन्य साधना विधि या क्रिया पद्धति अपनाने की आवश्यकता नहीं है।

इस पत्रिका के माध्यम से यह पहली बार पूर्ण विधि विधान के साथ स्पष्ट किया जा रहा है। यह गोपनीय होने के साथ अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और शीघ्र फलदायक है। आँखों के सभी प्रकार के रोग केवल मात्र इस मंत्र के पाठ से ही ठीक हो जाते हैं, हजारों लोगों का यह अनुभूत मंत्र रहा है।

इसका वर्णन कृष्ण यजुर्वेद में भी मिलता है। मेरे स्वयं के जीवन में यह अनुभूत प्रयोग रहा है और मैंने जितने लोगों को यह मंत्र पाठ करने के लिये कहा है उन सभी ने आश्चर्यजनक रूप से सफलताएं प्राप्त की है।

विधान :

रविवार को शुभ नक्षत्र और मुहूर्त में यह विधान प्रारम्भ करना चाहिए, अपने सामने हो सके तो सूर्य का चित्र रखना चाहिए और स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहन कर सूर्य को प्रणाम कर निवेदन करना चाहिए कि वह आंखों के समस्त रोग दूर करे, यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो यह अनुष्ठान प्रारम्भ करने के लिये अत्यन्त शुभ माना गया है, हस्त नक्षत्र युक्त रविवार से भी यह पाठ प्रारम्भ किया जा सकता है।

लाल कनेर तथा लाल चन्दन मिलाकर उसमें जल डालकर सूर्य को अर्घ्य देकर यह पाठ प्रारम्भ करना चाहिए नित्य बारह पाठ करने चाहिए तथा इस प्रकार नियमित रूप से बारह रविवार तक इसका प्रयोग करना चाहिए. ऐसा प्रयोग सम्पन्न होने पर असाध्य नेत्र रोग भी दूर होते देखे गये हैं। रविवार को एक समय बिना नमक का भोजन करना साधना में पूर्ण सफलतादायक माना गया है।

नियमित दवा, धर्मानुष्ठान, पुण्य कर्म आदि से भी जब रोग शान्त नहीं होता तो उस रोग को पूर्व जन्म कृत पाप से उत्पन्न समझना चाहिए। यह मंत्र इस प्रकार के पूर्वजन्य रोग को भी दूर करने में सहायक है।

"परशुराम कल्पसूत्र" में चाक्षुषोपनिषद के बारे में बताया गया है कि इसकी साधना से दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। 'वीरसिंहावलोक' ग्रन्थ में बताया गया है कि यह सोलह मंत्रों से संबंधित समष्टिरूपिणी विद्या है, मूलाधार से ध्यान केन्द्रित करके इसका जप करना चाहिए। चरक संहिता में बताया गया है कि जो मनुष्य इस विद्या को सिद्ध कर लेता है उसे भूमि में गड़ा हुआ धन भी साफ साफ दिखाई देने लग जाता है। अष्टांग हृदय ग्रन्थ में बताया गया है कि ऐसा व्यक्ति दिव्य दृष्टि सम्पन्न होता है और उसे जीवन में कभी भी नेत्रों से संबंधित रोग नहीं होता।

विनियोग :

अस्याश्चक्षुष्मतीविद्याया ब्रह्मा ऋषि :। गायत्री छन्द:। श्रीसूर्यनारायणो देवता। ऊं बीजम्। नम: शक्ति:। स्वाहा कीलकम्। चक्षुरोगनिवृत्तये जपे विनियोग :।

ध्यान :

सामने सूर्य नारायण का चित्र रखकर निम्नलिखित ध्यान करना चाहिए :

चक्षुस्तेजोमयं पुष्पं कन्दुकं विभ्रतीं करै: ।
रौप्यसिंहासनारूढां देवीं चक्षुष्मतीं भजे ।।

ऊं सूर्यायाक्षितेजसे नम: खेचराय नम:, असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूप:। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूप:।

वय:सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमाना:। अपध्वान्तमूर्णु हि पूर्धि चक्षुर्मु-मुग्ध्यस्मा-न्निधयेव बद्धान् ।। पुण्डरीकाक्षाय नम:। पुष्करेक्षणाय नम:। अमलेक्षणाय नम:। कमलेक्षणाय नम:। विश्वरूपाय नम:। श्रीमहाविष्णवे नम :।।

इति षोडशम-समष्टिरूपिणी चक्षुष्मतीविद्या दूरदृष्टि: सिद्धिप्रदा।

लेखक को एक साधक हिमालय में मिला था जिसे सूर्यत्राटक सिद्ध था, वह सूर्योदय से सूर्यास्त तक बिना पलक झपकाये सूर्य को एकटक देखकर इस त्राटक को को सिद्ध किया था, उसके अनुसार चाक्षुषोपनिषद की विधि इस प्रकार से भी है :

प्रयोग विधि :

शुक्ल पक्ष के रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है। नेत्र रोगी साधक को चाहिए कि वह नित्य ग्यारह पाठ करे परन्तु रविवार के दिन १०८ पाठ अवश्य करे। इससे पुर्व नेत्र रोगी साधक को चाहिए कि वह सूर्य की पूजा करने के बाद कांसी की थाली में शुद्ध जल भरकर ऐसे स्थान पर रखे जहां उस जल में सूर्य प्रतिबिम्ब पड़ता हो। साधक को उस जल पर नजर रखते हुए पाठ करना चाहिए। बैठते समय साधक का मुंह पूर्व की तरफ हो तथा मात्र सफेद धोती पहनी हुई हो। पाठ पूर्ण होने पर किया हुआ जप सूर्य नारायण को अर्पित करके नमस्कार करना चाहिए फिर उस कांसी की थाली में रखे हुए शुद्ध जल से अपने अधखुले नेत्रों पर छिटकाव करना चाहिए। जल छिटकने के बाद पांच मिनट तक दोनों आंखे बंद रखें, इसके बाद वह अपना दैनिक कार्य कर सकता है।

पाठ समाप्त करने के बाद नित्य "ऊं वर्चोदा असि वर्चो मे देहि स्वाहा - मंत्र से गो घृत की दस आहुतियां अग्नि में देनी चाहिए। रविवार की बीस आहुतियां देना आवश्यक है तथा दिन में एक बार बिना नमक का भोजन करना चाहिए। यदि आहुति न दे सके तो कोई आपत्ति नहीं परन्तु यदि पाठ के बाद नित्य यज्ञाहुति दी जा सके तो ज्यादा उत्तम माना गया है।

चक्षष्मतीविद्या का पाठ :

ऊं चक्षुश्चक्षुश्चक्षु तेज: स्थिरो भव। मां पाहिपाहि। त्वरितं चक्षुरोगान् प्रशमय प्रशमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय, यथाहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय, कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि यानि पूर्वं जन्मोपार्जितानि चक्षु: प्रतिरोधकदुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ऊं नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्य - भास्कराय। ऊं नम : करुणाकरायामृताय। ऊं नमो भगवते श्रीसूर्यायाक्षितेजसे नम:। ऊं खेचराय नम:। ऊं महासेनाय नम:। ऊं तमसे नम:। ऊं रजसे नम:। ऊं सत्याय (सत्वाय) नम:। ऊं असतो मा सद्गमय। ऊं तमसो मा ज्योतिर्गमय। ऊं मृत्योर्मा मृत गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूप : हंसो भगवाञ्छुचिरप्रतिरूप:।

ऊं विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं
हिरण्मयं ज्योतीरूपं तपन्तम्।
सहस्त्ररश्मि: शतधा वर्तमान:
पुर: प्रजानामुदयत्येष सूर्य :।।

ऊं नमो भगवते श्रीसूर्यायादित्यायाऽक्षितेजसेऽहोवा हिनि स्वाहा ।।

ऊं वय: सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं
प्रियमेधा ऋषयो नाधमाना:।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि-
चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान् ।।

ऊं पुण्डरीकाक्षाय नमः। ऊं पुष्करेक्षणाय नमः।
ऊं कमलेक्षणाय नमः। ऊं विश्वरूपाय नमः।
ऊं श्रीमहा विष्णवे नमः। ऊं सूर्यनारायणाय नमः॥
ऊं शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अर्थ :

हे चक्षु के अभिमानी सूर्यदेव। आप चक्षु में चक्षु के तेजरूप से स्थिर हो जाय। मेरी रक्षा करे, रक्षा करें। मेरी आंख के रोगों का शीघ्र शमन करे, शमन करे। मुझे अपना सुवर्ण जैसा तेज दिखला दें। दिखला दे। जिसमे से अन्धा न होऊं, कृपया वैसे ही उपाय करें। उपाय करें। मेरा कल्याण करे, कल्याण करें। दर्शन शक्ति का अवरोध करने वाले मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़ से उखाड़ दे, जड़ से उखाड़ दे। ऊं (सच्चिदानन्दस्वरूप) नेत्रोंको तेज प्रदान करने वाले दिव्य स्वरूप भगवान भास्कर को नमस्कार है। ऊं करूणाकर अमृतस्वरूपको नमस्कार है। ऊं भगवान् सूर्यको नमस्कार है। ऊं नेत्रों के प्रकाश भगवान सूर्यदेवको नमस्कार है। ऊं आकाश विहारी को नमस्कार है। (परम श्रेष्ठ स्वरूप को नमस्कार है। ऊं (सबमें क्रिया शक्ति उत्पन्न करने वाले) रजोगुणरूप भगवान सूर्य को नमस्कार है। (अन्धकार को सर्वथा अपने भीतर लीन करने वाले) तमोगुण के आश्रयभूत भगवान् सूर्य को नमस्कार है। हे भगवन्। आप मुझको असत्से सत् की ओर ले चलिये। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलिये। मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिये। उष्णस्वरूप भगवान सूर्य शुचिरूप हैं। हंसस्वरूप भगवान सूर्य शुचि तथा अप्रतिरूप हैं उनके तेजोमय स्वरूप की समता करने वाला कोई भी नहीं हैं। जो ब्राह्मण इस चक्षुष्मती विद्या का नित्य पाठ करता है उसे नेत्र सम्बन्धी कोई रोग नहीं होता। उसके कुल में कोई अंधा नहीं होता। आठ ब्राह्मणों को इस विद्या का दान करने पर इसका ग्रहण करा देने पर इस विद्या की सिद्धि होती है।

फरवरी १९७८ के स्वास्थय पत्रिका में भी इस सबंध में एक विवरण प्रकाशित हुआ था जिसमें गुजरात से प्रसिद्ध डाक्टर श्री नरहरि भाई के अनुभव का विवरण था, उन्होंने लिखा था कि एक बार उन्हें भंयकर नेत्र रोग हुआ इसमें आंख का पर्दा फट जाता है और आंखों की रोशनी चली जाती है। सर्जनों के प्रयत्नों से भी जब कुछ नहीं हो सका तो वे पूरी तरह से निराश हो गये, उन्हीं दिनों अचानक उनके घर महात्मा पूज्य अवधूत बाबा आये जो कि इससे पूर्व भी कई बार उनके घर आया करते थे।

अवधूत बाबा ईश्वर के दर्शन किये हुए अवतारी पुरूष माने जाते है। डाक्टर साहब की प्रार्थना पर उन्होंने "चक्षुष्मतीविद्या" प्रदान की और उपरोक्त प्रयोग बताया।

इस अनुष्ठान के विधिपूर्वक करने से डाक्टर साहब को पूर्ण रूप से नेत्र ज्योति प्राप्त हुई जबकि सर्जन भी आश्चर्य करते हैं कि बिना आपरेशन के यह सफलता ससार का आश्चर्य है। डाक्टर साहब जीवित है और अब भी उनकी नेत्र ज्योति पूर्ण रूप से सही है। उनका कहना है कि इस 'चक्षुष्पती विद्या' के प्रभाव से मेरी नेत्रज्योति है अन्यथा मैं कब का अंधा हो गया होता, उन्होंने इस विद्या की प्रतियां छपवा कर निशुल्क वितरित की हैं, जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया है।

वास्तव में ही यह विद्या अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ मानी गई है। इस कलिकाल में यह प्रामाणिक और तुरन्त फल देने वाली विद्या है। जिससे कि साधक स्वयं लाभ उठा सकते हैं और दूसरों को मार्गदर्शन देकर उनका कल्याण कर सकते हैं, नेत्र सम्बन्धी किसी भी प्रकार की बीमारी एवं सफेद कुष्ठ आदि के लिये यह विद्या रामबाण मानी गई है।

स्त्रियां भी इस प्रयोग को कर सकती है परन्तु ऋतुकाल में इसका प्रयोग निषिद्ध है। यदि साधक स्वय सक्षम नहीं तो किसी ब्राह्मण से भी यह पाठ एव अनुष्ठान सम्पन्न कराकर लाभ ले सकता है। पर ऐसी स्थिति में ब्राह्मण पाठ समाप्त करने के बाद संकल्प भरे कि मैंने जो पाठ किये हैं उसका फल अमुक यजमान को प्राप्त हो।

बारह रविवार तक अनुष्ठान सम्पन्न होंने के बाद बारह ब्राह्मण या बारह छोटे छोटे बालकों को खीर का भोजन कराना चाहिए और उन्हें सफेद वस्त्र दान देने चाहिए।

जिन्हें संस्कृत उच्चारण मे असुविधाहोती हो, उसे हिन्दी अनुवाद का पाठ करना चाहिए, इससे भी पूर्ण सफलता मिलती है ऐसा विधान है। ※

विश्व को आश्चर्यजनक उपलब्धि : कनकधारा यंत्र

पिछले आठ वर्षों के अनुभव प्रयोग परीक्षण और प्रभाव को देखने के बाद पूरे विश्व के तांत्रिक, मंत्र-मर्मज्ञ एवं विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आज के अनास्थावादी युग में भी 'कनकधारा यंत्र' अचूक एवं शीघ्र फलदायक होने के कारण यह विश्वास दिलाने में समर्थ है कि अभी मंत्र-तंत्र का लोप नहीं हुआ है, अब भी कुछ यंत्र ऐसे हैं, जिनका प्रभाव निश्चित होता है, अचूक होता है और आश्चर्यजनक होता है।

विश्व के प्रसिद्ध मंत्र मर्मज्ञ 'हिरकोन' ने अपने जीवन के अन्तिम चरण में निष्कर्ष पर आते हुए कहा कि 'कनकधारा यंत्र' भारतवर्ष की अमूल्य थाती है जिसके बल पर ही वह 'सोने की चिड़िया' कहला सका, इस यंत्र में दरिद्रता विनाश का अद्भुत गुण है यह यंत्र जहां भी होता है वहीं अपना प्रभाव बिखेरने लग जाता है, जिस प्रकार अगरबत्ती जहां पर भी जलेगी वहीं सुगन्ध छोड़ेगी, इसी प्रकार यह यंत्र भी जहां रहता है, वहीं स्वर्ण-वर्षा सी करने की स्थिति पैदा कर देता है।

जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् 'श्मेलजर' ने कनकधारा यंत्र के बारे में स्वतंत्र लेख लिखते हुए अपना निष्कर्ष स्पष्ट किया है, कि जिस दिन विश्व कनकधारा यंत्र के मूल रहस्य को समझ लेगा, उस दिन उसे किसी भी प्रकार का आर्थिक अभाव नहीं रहेगा।

भारत के तांत्रिक सम्राट त्रिजटा अघोरी ने स्पष्ट शब्दों में बताया है कि यदि हमारे सभी तंत्र-मंत्र के ग्रन्थ नष्ट हो जांय, पर केवल कनकधारा यंत्र व उसकी रहस्य विधि बची रह जाय तब भी हम धनी हैं, विश्व में सर्वोपरि है, संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्रसिद्ध मंत्र शास्त्री हरिपाद ब्रह्मचारी ने 'कनकधारा यंत्र रहस्य' शीर्षक ग्रन्थ की रचना की हैं, जो हस्तलिखित दुर्लभ प्रति है जिसके अन्त में निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने लिखा है – हमारे भारत वर्ष में कनकधारा यंत्र जैसी अद्भुत वस्तु मोजूद है फिर भी हम गरीब हैं, यह आश्चर्य नहीं तो और क्या है?

कनकधारा स्तोत्र :

कथा प्रसिद्ध है, कि आचार्य शंकराचार्य एक दिन भिक्षा के लिए एक सद्गृहस्थ के द्वार पर पहुँचे और 'भिक्षां देहि' का घोष किया, वह ब्राह्मण परिवार अत्यन्त दरिद्र था, अपने द्वार पर एक तेजस्वी अतिथि को देखकर गृहिणी लाज से गड़ गई, क्योंकि उसके घर में भिक्षा में देने के लिए कुछ भी नहीं था, पूरे घर को छानने पर एक सूखा हुआ आंवला उस ब्राह्मणी को मिला, जिसे लेकर वह झर-झर रोती हुई भिक्षा देने के लिए द्वार पर आई, तथा अत्यन्त संकोच के साथ वह उसे अर्पण करने लगी। भगवान शंकर को उसकी दुरावस्था पर तरस आ गया, उन्होंने वहीं बैठकर तत्काल ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी, वात्सल्यमयी भगवती महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की, और उनकी वाणी से अनायास ही करूणापूर्ण ऐसी कोमल कान्त पदावली प्रस्फुटित हुई, जिसे सुनकर भगवती महालक्ष्मी देखते-देखते आचार्य के सम्मुख अपने त्रिभुवन मोहन रूप में प्रकट हो गई और कोमल शब्दों में पूछा, मुझे कैसे स्मरण किया ? आचार्य शंकर ने सारी कथा कह सुनाई और प्रार्थना की कि उस गरीब ब्राह्मणी की दरिद्रता दूर करें। भगवती लक्ष्मी ने बताया कि उस गृहस्थ का प्रारब्ध ऐसा नहीं है कि उसे इस जन्म में धन प्राप्ति हो। आचार्य

ने विगलित कंठ से निवेदन किया कि क्या इस आंगन में इस स्तोत्र पाठ के बाद भी यह संभव नहीं है ? तब भगवती महालक्ष्मी ने बताया कि इसके घर में कनकधारा यंत्र रखकर इस स्तोत्र का पाठ करो, तो इसका दुर्भाग्य टल सकता है। भगवान शंकर ने ऐसा ही किया और उसी समय उस दरिद्र ब्राह्मण के आंगन में सोने की वर्षा हुई, जिसके फलस्वरूप उस गृहस्थ का दारिद्र्य सदा के लिये मिट गया और वह प्रचुर धन सम्पत्ति का स्वामी हो गया।

प्रसिद्ध ग्रन्थ 'शंकर-दिग्विजय' के चतुर्थ सर्ग में इस घटना का स्पष्ट उल्लेख है, पर उसमें मात्र स्तोत्र का ही उल्लेख है, यह स्तोत्र कल्याण आदि में भी कई बार छप चुका है पर मुझे कुछ वर्षों पूर्व एक साधु से अत्यन्त पुरानी हस्तलिखित प्रति देखने को मिली थी, जिसमें ऊपर वाली घटना ज्यों की त्यों थी पर साथ ही यह भी उल्लेख था कि 'कनकधारा यंत्र निर्माण के बाद ही भगवती लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर स्वर्ण वर्षा की। हिमालय स्थित 'सिद्धाश्रम' के मंत्र स्वरूप ऋषि 'कात्यायन' जी ने भी इसी बात की पुष्टि की थी कि कनकधारा यंत्र महत्वपूर्ण है, तथा व्यापार वृद्धि एवं दारिद्र्य नाश में अद्भुत प्रभावशाली है, उन्होंने ही मुझे इस यंत्र का स्वरूप व विधि समझाई थी।

'कनकधारा' यंत्र का स्वरूप

कनकधारा यंत्र पंच त्रिकोणों से निर्मित है. यंत्र के चारों तरफ तीन परिधि खींची जाती हैं जो कि तीन शक्तियों महाकाली (शत्रु संहार कर्त्री) महालक्ष्मी (धन धान्य प्रदान कर्त्री), महा सरस्वती (यश सम्मान प्रदान कर्त्री), की प्रतीक है, इसके पश्चात् गोल घेरा त्रिभुवन सुन्दरी का प्रतीक है, तत्पश्चात सोलह कमल दल है जो कि कुबेर सहचर के प्रतीक है, जिनके नाम है १. धन २. धान्य ३. पृथ्वी ४. भवन ५. कीर्ति ६. आयु ७. यश ८. सम्पदा ९. वाहन १०. स्त्री ११. सन्तान १२. राज्य सम्मान १३. स्वास्थ्य १४. प्रफुल्लता १५. भोग तथा १६. मोक्ष।

इसके पश्चात् सोलह कमल दलों के भीतर अष्टदल का निर्माण होता है, जो कि अष्टलक्ष्मी सिद्धियों का प्रतीक है जिनके नाम १. अणिमा २. महिमा ३. लघिमा ४. प्राप्ति ५. प्राकाम्य ६. ईशिता ७. वशिता तथा ८. ख्याति है. इसके पूजन से जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

इस अष्ट दल के भीतर का त्रिकोण 'दारिद्र्य विनाशक धनदा लक्ष्मी' का प्रतीक है, इसके भीतर का त्रिकोण भुवनेश्वरी लक्ष्मी का परिचायक है, तथा त्रिकोण के मध्य का बिन्दु भगवती का सूचक है जो कि समस्त अनिष्टों का नाश करने वाली तथा जीवन में प्रफुल्लता बढ़ाने वाली है, साधक को इस बिन्दु पर स्वर्ण सिंहासनारूढ़ भगवती लक्ष्मी की कल्पना करनी चाहिए।

इस प्रकार से यह यंत्र समस्त प्रकार की धनदायक शक्तियों का परिचायक एवं सूचक है, तथा इस यंत्र की पूजा इन सारी शक्तियों की समग्र पूजा है।

कनकधारा यंत्र धातु निर्मित होता है तथा यंत्र का निर्माण अत्यन्त पेचीदा एवं सूक्ष्म है। कनकधारा यंत्र रहस्य' हस्तलिखित प्रति के अनुसार इसे कूर्मपृष्ठीय बनाना चाहिए तथा धातु निर्मित हो, इसके साथ ही संजीवनी काल में ही इस यंत्र का निर्माण हो, क्योंकि अशुद्ध एवं अप्रामाणिक यंत्र लाभ की बजाय हानि दे सकता है।

घर के अतिरिक्त, दुकान, कारखाना, फैक्ट्री, व्यवसाय-स्थल पर भी इस यंत्र को स्थापित किया जा सकता है। 'यंत्र राज' ग्रन्थ के अनुसार इस यंत्र को घर में स्थापित करने से अटूट लक्ष्मी प्राप्त होती है, तथा घर में लक्ष्मी का चिरकाल तक वास रहता है।

यंत्र तभी फलदायक हो सकता है जब वह मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, इस यंत्र पर संजीवनी सम्पुट युक्त प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए, अपने घर में किसी भी बुधवार को इस यंत्र को स्थापित किया जा सकता है, गृहस्थ व्यक्तियों को, यदि शुद्ध मंत्रोच्चार एवं प्राण प्रतिष्ठा क्रिया का ज्ञान न हो तो उन्हें चाहिए कि वे किसी योग्य विद्वान से प्राण प्रतिष्ठा युक्त मंत्र सिद्ध कनकधारा यंत्र ही लें।

कनकधारा विनियोग :

ओम अस्य श्री कनकधारा यंत्र मंत्रस्य, श्री आचार्य श्री शंकर भगवत्पाद ऋषि: श्री भुवनेश्वरी ऐश्वर्यदात्री महालक्ष्मी देवता, श्री बीजं, ह्रीं शक्ति, श्री विद्या: रजोगुण रसना ज्ञानेन्द्रियं भोग रसः वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यमं स्वरं. द्रव्य तत्व, विद्या कला, ऐं कीलनं ब्रू उत्कीलनं, प्रवाहिनी सचय मुद्रा, मम क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभि वृद्धयर्थं श्री महा लक्ष्मी अष्ट लक्ष्म्यै भगवती दारिद्र्य विनाशक धनदा लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थं च नमोयुत वाग् बीज स्व बीज लोम विलोम पुटितोक्त त्रिभुवन भूतिकरी प्रसीद मह्यम् माला मंत्र जपे विनियोग।

कनकधारा ध्यान :

सरसिज निलये सरोज हस्ते ।
धवल तमांशुक गन्ध माल्य शोभे ।
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवन भूति करि प्रसीद मह्यम् ॥१॥

कनकधारा मंत्र :

ओम वं श्रीं वं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा

कनकधारा यंत्र एवं कनकधारा स्तोत्र का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है. व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने घर में मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यंत्र स्थापित करें एवं नित्य कनकधारा स्तोत्र का पाठ करे। कनकधारा स्तोत्र स्वय मंत्रमय है, अतः विभिन्न सम्पुट देकर स्तोत्र पाठ से विभिन्न कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं, उदाहरणार्थ धनदा सम्पुट से अतुल धन प्राप्ति, पुत्रेष्टि सम्पुट से पुत्र लाभ,, संजीवनी सम्पुट से रोग मुक्ति, एवं अष्ट लक्ष्मी सम्पुट से अटूट धन सम्पति प्राप्त की जा सकती है, विद्वानों के अनुसार श्री यंत्र एवं कनकधारा यंत्र का अद्भुत सामंजस्य है, जिसके पास श्री यंत्र है उनके लिए तो यह वरदान स्वरूप है, कि वे श्रीयंत्र के साथ ही कनकधारा यंत्र भी स्थापित करें, इसके समान सामंजस्य विश्व में दुर्लभ है।

ज्ञानामृत

याद करिये, बातचीत में, उपयोग करिये, बड़े अक्षरों में लिख कर घर में टांगिये

सत्यं माता, पिता ज्ञान. धर्मो भ्राता, दया सखा।
शांतिः पत्नी, क्षमा पुत्र, षडेते मम बांधवाः ॥

इस विश्व में मेरे छः बन्धु बान्धव हैं, जिनमें मेरी माता सत्य, मेरे पिता ज्ञान, भाई धर्म, तथा मेरे मित्र के रूप में दया है, मेरी पत्नी शांति तथा पुत्र क्षमा है, जिसके ऐसे बन्धु बान्धव हो, उसे इस विश्व में फिर कमी किस बात की हो सकती है ?

क्रोधः प्राणहरः शत्रु क्रोधो मित्रमुखो रिपुः ।
क्रोधो ह्यसिर्महा तीक्ष्णः सर्वं क्रोधो ऽपकर्षति ॥

क्रोध प्राणों को ले लेने वाला शत्रु, मित्र के रूप में शत्रुवत् व्यवहार करने वाला, तीक्ष्ण तलवार के समान चोट करने वाला तथा पूरे जीवन को बरबाद करने वाला है, अतः क्रोध से बचने वाला ही उन्नति कर सकता है।

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता ।
सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणाति रिच्यते ॥

दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य का, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता का और हजार पिताओं की अपेक्षा माता का गौरव और महत्व अधिक होता है।

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधयः कान्ता मनोहारिणी,
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषित रतिः सेवारताः सेवका।
आतिथ्यं गृह पूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्न पानं गृहे,
साधो संग उपासनाश्च सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः ॥

आनन्ददायक घर हो, बुद्धिमान पुत्र हो, चित्त को प्रसन्न करने वाली पत्नी हो, अच्छे मित्र, पर्याप्त धन संपत्ति, सुन्दर शरीर और सेवा करने वाले नौकर हो, घर में अतिथि आते रहते हो, सुस्वादु भोजन जिस घर में बनते हो तथा साधु सन्तों की सेवा तथा ईश्वर में चित्त हो, ऐसा गृहस्थ वास्तव में ही धन्य है।

स्वप्न : समस्याओं के निराकरण में सहायक

स्वप्न प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग है। जो भी व्यक्ति नींद लेता है उसे स्वप्न आना अनिवार्य है। यह अलग बात है कि उसे वह स्वप्न याद रहे या न रहे। कई स्वप्न आंख खुलने पर याद रह जाते हैं और अधिकांश स्वप्न हम भूल जाते हैं। इस सम्बन्ध में कई प्रकार की धारणाएं हैं, कुछ लोगों के अनुसार स्वप्न के समय जीव इस शरीर से निकल कर कहीं अन्यत्र चला जाता है और वहां के विचित्र दृश्य देकर निद्रा भंग होने तक पुनः शरीर में लौट आता है, कुछ लोगों के अनुसार स्वप्न में भविष्य के संकेत हैं।

स्वप्नशास्त्रियों के अनुसार सोने के बाद घंटे भर के अन्दर अन्दर पहला स्वप्न मानव देख लेता है। स्वप्नों की तीव्रता होने पर नेत्रों की पुतलियां घूमने लग जाती है। सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति हर रात पांच छः स्वप्न देखता है,

नोबल प्राइज विजेता प्रो० एडयर एड्राइन के अनुसार सोने के समय हमारे मस्तिष्क का अवचेतन क्रमशः सक्रिय होता जाता है क्योंकि उस पर से धीरे धीरे दबाव कम होने लगता है। यह दबाव कम होने पर मस्तिष्क-तरंगों का कंपन-क्रम बदलता है और मस्तिष्क तरंगें एक विशेष गति से दौड़ती है। इसी से स्वप्न दिखाई देते है।

हिमालय के प्रसिद्ध योगी स्वामी विरूपानन्द जी ने इस सम्बन्ध में कई वर्षो तक प्रयोग किये हैं और इस क्षेत्र के वे अधिकारी व्यक्ति माने जाते हैं। उन्होंने एक विशिष्ट विधि बताई है जिसके अनुसार व्यक्ति स्वप्न के माध्यम से अपनी दैनिक समस्याओं का हल प्राप्त कर सकता हैं।

रात्रि को सोने से पूर्व अपने हाथ पैर ठण्डे पानी से धो लें, फिर अपनी समस्या को एक साफ सफेद कागज पर लिख लें और उस कागज को अपने सिरहाने रख दें तथा स्वप्नेश्वरी देवी का निम्न ध्यान उच्चारित कर निवेदन करे कि मुझे इस समस्या का सही हल आप स्वप्न में बता दें तथा हल बताने के साथ ही मेरी निद्रा खुल जाय।

स्वप्नेश्वरी देवी का ध्यान :

स्वप्नेश्वरी महादेवी, श्री श्रीमन्तर साधने।
मम सिद्धि असिद्धि वां, स्वप्ने सर्वं प्रदर्शयः॥

इस प्रकार ध्यान कर अपने प्रश्न को पुनः उच्चारित करे और आंख बन्द करके सो जाय। रात्रि को अवश्य ही स्वप्न में इस समस्या का निराकरण स्वप्नेश्वरी देवी स्पष्ट करती है।

नित्य कई प्रकार की समस्याएं हमारे सामने आती हैं जिसमें मन डावांडोल हो जाता है कि यह कार्य किया जाय या नहीं, तुरन्त निर्णय नहीं लिया जाता ऐसी स्थिति में यह विधि अत्यन्त अनुकूल मानी गई है।

स्वामी जी के अनुसार पहले इस मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए, सवा लाख मंत्र जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और इसके बाद जब भी मंत्र उच्चारण कर अपनी समस्या को स्पष्ट कर के सोने पर स्वप्न में उस समस्या का सही हल प्राप्त हो जाता है जिससे कि जीवन में सही निर्णय लेने में अनुकूलता होती है।

पीछे जो ध्यान लिखा गया है यही ध्यान मंत्र भी है। अतः इसी ध्यान या मंत्र का सवा लाख जप २१ दिन मे पूरा करना चाहिए।

स्वप्न में सही हल प्राप्त हो, इसके लिये एक तंत्रोक्त विधान भी अनुभूत है और इसे केरल के प्रसिद्ध योगी स्वामी पुटट्नाथ ने बताया था। यह मंत्र मात्र ग्यारह सौ बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है, सिद्ध होने पर रात्रि को सोते समय मंत्र उच्चारण कर अपनी समस्या बोल कर सो जाना चाहिए, एक घटे के भीतर-भीतर समस्या का हल स्वप्न में दिखाई देता है।

मंत्र :

ओम क्लीं स्वप्नमोहिनी ह्रीं मलयाल भगवति सकल-सम्भूत सम्मोहिनी क्ली कोडूमारू बुद्धि कडूतु प्रभाकि कोडवा मलयाल भगवति कोडुवा ईश्वराणे। उमक् उमाणे उपच्छु मुधतु मक्कोटि देवा क्वलाणे कोडुवा मलयाल भगवति क्लीं।

यह मंत्र अनुभूत है और कोई भी साधक इसे सिद्ध करके पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है। स्वामीजी के अनुसार यह मंत्र अत्यन्त गोपनीय है और किसी पर विशेष कृपा होने पर ही स्वामी जी इस मंत्र को बताते थे।

वास्तव में ही स्वप्न हमारे जीवन में सहायक हैं और इनके माध्यम से हम सही और तुरन्त निर्णय लेने में समर्थ हो पाते हैं।

समर्पण-स्तुति

समर्पण-स्तुति

प्रत्येक गृहस्थ के लिये सायंकालिन आरती आवश्यक और महत्वपूर्ण मानी गई है, प्रत्येक गृहस्थ के घर में पूजा का एक स्थान होना चाहिए और उसमें देवी देवता की मूर्ति या तस्वीर स्थापित होनी चाहिए, इसमें उसके इष्ट देव या अन्य देवताओं की तस्वीरें रखी जा सकती हैं।

परन्तु इन मूर्तियों में गणपति की मूर्ति या तस्वीर, गुरू की तस्वीर और अपने इष्ट की तस्वीर या मूर्ति आवश्यक है।

गृहस्थ को चाहिए कि प्रातः और सांय दोनों समय पूजा स्थान में अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए, 'वैवर्त' के अनुसार सांयकाल ठीक सात बजे सभी देवता प्रत्येक गृहस्थ के घर में विचरण करते हैं और यदि उनकी मूर्ति या तस्वीर होती है तो उसमें संजीवन रहते हैं, अतः प्रत्येक गृहस्थ को चाहिए कि वह अपने घर में नित्य सायंकाल ठीक सात बजे आरती अवश्य करे। इसके लिये कोई विशेष विधान नहीं है, कि अमुक आरती ही जरूरी है परन्तु जो भी उसके धर्म और इष्ट के अनुसार अनुकूल हो उस आरती का उच्चारण पूजा स्थान पर बेठकर घर के सभी सदस्यों को एक स्वर से करना चाहिए।

आरती के बाद अपने आपको प्रभु के सामने समर्पित करने की भावना से स्तुति यदि की जाय तो ज्यादा अनुकूल रहता है, प्रत्येक गृहस्थ के लिये उपयोगी एक स्तुति नीचे दी जा रही है।

स्तुति

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में॥
मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में॥
यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तब चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।
जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं॥
फिर अन्त समय में प्राण तजूं साकार तुम्हारे हाथों मे॥
मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥

ये विचित्र रहस्यमयी वस्तुएँ

रोमांचक खोज

भारतीय तंत्र-ग्रंथों में कुछ ऐसी वस्तुओं का तथा उनकी प्रयोग विधि का उल्लेख मिलता है, जो कि दुर्लभ हैं। इन वस्तुओं की दुर्लभता के कारण हैं सहजता से प्राप्त न होना, देव-निर्मित होना व घने जंगलों में प्राप्य होना। मैं कुछ ऐसी ही दुर्लभ वस्तुओं का उल्लेख कर रहा हूं, जिन्हें प्राप्त करने में मुझे जरूरत से ज्यादा कष्ट भोगने पड़े हैं और अपने प्राणों तक की बाजी लगानी पड़ी हैं।

लाल बूंदों वाली चितावर की लकड़ी

तांत्रिक ग्रंथों में इसके बारे में बहुत कुछ लिखा मिलता है, परन्तु यह लकड़ी अत्यन्त कठिनाई से विरले लोगों को ही प्राप्त होती है। इस लकड़ी को प्राप्त करने के लिए मुझे जो कष्ट उठाने पड़े हैं,वह मैं ही जानता हूँ।

मध्यप्रदेश के घने जंगलों में यह लकड़ी प्राप्त होती है। जिस वृक्ष की यह टहनी होती है, उसकी पहचान यह है कि इस टहनी में नाखून गड़ाने से लाल रंग की बूंद सी छलछला आती हैं। आश्चर्य की बात यह है कि पेड़ की सभी डालियां या टहनियां एक समान नहीं होती। अधिकांश टहनियों में नाखून गड़ाने पर हरा-सा द्रव निकलता है, परन्तु उस पेड़ की सबसे ऊंची टहनियों में से कोई एक-आध टहनी ऐसी भी होती है, जिसमें नाखून घुमाने से लाल रंग की बूंदे छलछला आती है। ऐसी ही टहनी हमारे लिए उपयुक्त होती है। यह टहनी पतली और बठीली होती है तथा ३० से0 मी0 से लम्बी नहीं होती। साथ ही यह टहनी कोमल होती है और दूर से देखने पर लिपटी हुई-सी दिखाई देती है। पूरे पेड़ पर इस प्रकार की यह एक ही टहनी होती है और कुछ समय बाद यह पेड़ पर ही सूख कर नीचे गिर जाती है।

कहते हैं कि इस लकड़ी की पहचान कौए को विशेष रूप से होती है। मध्य भारत के घने जंगलों में गहरे काले और मोटे कौए होते हैं, जो जंगली कौए कहलाते हैं।

मानव मस्तिष्क कौए से भी ज्यादा चालक होता है। मादा कौए के जब बच्चे होते हैं, तो घने जंगलों में रहने वाले आदिवासी उन छोटे छोटे बच्चों के पैरों मे लोहे के छल्ले डाल देते हैं और लोहे के तार का छल्ला पेड़ की डाल पर कस लेते है, इससे वे उड़ नहीं पाते।

मादा कौआ इस स्थिति को बहुत पहले ही भांप जाती है कि इन लोहे के छल्लों के कारण मेरा बच्चा पंख समर्थ होने पर भी उड़ नहीं पायेगा, अतः वह ऐसी लकड़ी की तलाश में भटकती है, जिससे वह लोहे के छल्लों को काट सके।

भटकते भटकते जब उस कौए को ऐसी लकड़ी मिल जाती है, तो वह ला कर उन छल्लों से स्पर्श कराती है और लोहे के छल्ले टूट कर गिर पड़ते हैं, फिर कौआ अपने उन बच्चों को वहां से हटा देता है और वह लकड़ी वहीं छोड़ जाता है, तब मनुष्य उस लकड़ी को वहां से उठा लाता है, यही लकड़ी चितावर की लकड़ी होती है।

चितावर की लकड़ी इसीलिए तो प्रसिद्ध है कि यह अपने आप में कोमल होते हुए भी लोहे के बहुत पतले छल्ले को काट सकती है। इस लकड़ी से तांत्रिक कई तरह के प्रयोग करते हैं।

पानी खौलाने वाला एक मुखी रूद्राक्ष

यह विशेषतः नेपाल में पैदा होता है, इसका पेड़ मध्यम कद का होता है। इसके पेड़ को 'तिपुरी' कहते हैं। संभवतः यह 'त्रिपुरारी' शब्द का अपभ्रंश हो। इसका फल ही रूद्राक्ष कहलाता है, रूद्राक्ष का तात्पर्य भी शिव ही है।

मैंने अपने जीवन में एक से इक्कीस मुखी रूद्राक्ष देखे है। तांत्रिक ग्रंथों में इनकी बड़ी महिमा बतायी गई है। मेरे पूज्य गुरू श्री स्वामी सच्चिदानंद जी द्वारा दी हुई एक से इक्कीस मुखी रूद्राक्ष की माला कई वर्षों तक मैं पहने रहा हूँ।

इन सबमें भी एकमुखी रूद्राक्ष दुर्लभ है और अत्यन्त कीमती होता है। जनश्रुति के अनुसार अभी तक पूरे विश्व में एकमुखी रूद्राक्ष के मात्र चौसठ दाने ही हैं, जिनमें से छत्तीस दाने नेपाल महाराजाधिराज के कोष में हैं। कहावत है कि एकमुखी रूद्राक्ष या तो महायोगी पहन सकता है या महाभोगी (राजा) के पास होता है। ऐसा रूद्राक्ष सिद्ध योगियों से ही प्राप्त हो सकता है।

जनश्रुति यह भी है कि एक पानी के भरे गिलास में यदि एकमुखी रूद्राक्ष डाल दिया जाये, तो कुछ समय के बाद वह पानी खौलने लग जाता है। यह भी कहा जाता है कि असली रूद्राक्ष को यदि दो तांबे के छल्लों के बीच में रखा जाये, तो रूद्राक्ष स्वतः फिरकी की तरह घूम जाता हैं।

श्वेतार्क गणपति :

राजस्थान में एक छोटा-सा पौधा होता है जिसे 'आक' या 'आकड़ा' कहते हैं। संस्कृत में इसे 'अर्क' के नाम से संबोधित किया जाता है।

सामान्यतः आक के पत्ते हरे होते हैं, परन्तु लाखों में एक पौधा सफेद पत्तों का भी पाया जाता है, इसे श्वेतार्क कहते हैं। इसमें भी दो भेद होते है, एक के फूल नीले होते है तथा दूसरे के फूल भी सफेद होते है। सफेद फूलवाला अर्क अत्यन्त दुर्लभ होता है।

यह प्रकृति का एक आश्चर्य ही है कि इस सफेद फूलवाले आक की मूल जड़ यदि खोद कर निकाल दी जाये और इस जड़ का ऊपरी छिलका यदि सावधानी से हटाया जाय तो स्वतः ही उस जड़ पर गणपति का चित्र अंकित दिखाई देगा। इसमें सूंड दक्षिण की तरफ होगी मेरे पूजा कक्ष में इस प्रकार के दो गणपति विग्रह है। शास्त्रों के अनुसार ऐसे घर में ऋद्धि-सिद्धि अन्नपूर्णा का वास होता है और ऐसा व्यक्ति कुबेरवत् होता है।

नीले फूलवाले सफेद आक की जड़ खोदने पर गणपति चित्र नहीं मिलेगा। कुछ लोग इस जड़ को बढ़ई को दे कर गणपति की मूर्ति बनवा लेते है, ऐसी मूर्ति भी फलप्रद कही जाती हैं।

सफेद फूलवाले श्वेतार्क की जड़ में स्वतः अंकित एक ही गणपति विग्रह होता है। मैंने अपने पूरे जीवन के भ्रमण काल में मात्र छह पौधे ही देखे हैं। स्वामी सहजानंद जी के अनुसार किवदंती यह है कि प्राचीन समय में ऐसी मंत्र सिद्ध-मूर्ति को साधक योगी अपनी झोली में रख देते थे, फिर उस झोली में से जितना भी धन निकाला जाता था उतना ही झोली में स्वतः आ जाता था।

रक्षा के लिए सियार सिंगी :

जंगल में विचरण करने वाले अधिकतर सियारों के सींग नहीं होते, पर प्रकृति की लीला विचित्र है. किसी किसी सियार के सिर पर एक छोटा सा सींग उग आता है, जो कि चार पांच सेन्टीमीटर के लगभग होता हैं तथा इसके चारों ओर ५-५ से मी. के लगभग भूरे रोम या बाल होते हैं।

कहते हैं इस प्रकार के सियार दस लाख में एक या दो होते हैं इस सींग की पहिचान यह है कि इस सींग को सिन्दूर में रख दिया जाता है, सिन्दूर पाकर इसके चारों ओर केरोम बढ़ने लगते है, यही इसके असली होने की पहचान है, नकली सियार सिंगी के चारों तरफ के बाल नहीं बढ़ते।

तांत्रिक ग्रन्थों में कहा गया है कि इन बालों को काटना नहीं चाहिए, क्योंकि काटने से इनका तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो जाता है, यह रक्षा कार्यों में अद्‌भुत सफलता दायक बताया जाता है, कई साधक इस प्रकार की मंत्र सिद्ध स्यार सिंगी को अपनी जांघ को चीर, उसमें रख कर ऊपर से पुनः टांके लगा देते है।

एक बार माउंट आबू से नीचे उतरते समय कार में पूरा परिवार था, कार अपनी गति से भाग रही थी, कि कानों में ध्वनि हुई रुको। आगे खतरा है, एक ही सेकेन्ड बाद कोई जोर से मेरे कानों में चीखा—रूको, और स्वतः ही मेरे मुंह से रूको! जोर से निकल पड़ा।

चर्र र्र की आवाज के साथ कार रुकी, तब तक तो कार का अगला पहिया खड्डे के किनारे पर था, हुआ यह

था कि सड़क के एक तरफ गहरा खड्डा था, ऊपर से भारी पत्थर सड़क पर गिरने से सड़क कट गयी थी, और सड़क के बीचो बीच अतल गहरा खड्डा बन गया था, उस खड्डे के एक किनारे पर कार का पहिया था।

यदि सैकेन्ड का सौवा हिस्सा भी चूक जाता, तो आज ये पंक्तियां लिखने को जीवित न रहता, मेरा तो यही विश्वास है कि मैं आज तक इतने खतरों से जो बच सका हूं, उसका एकमात्र कारण त्रिजटा अघोरी से प्राप्त स्यार सिंगी ही है।

एकाक्षी नारियल

बाजारों में जो जटावाले नारियल मिलते हैं उन नारियलों के ऊपर से यदि जूट हटा दी जाय तो एक कठोर गोला मिलेगा, जिसके अन्दर सुरक्षित गिरी या नारियल का पानी रहता है।

इस कठोर गोले पर दो चिन्ह होते हैं, जो कि आंखों की तरह दिखाई देते हैं, बिल्कुल ऐसा प्रतीत होता है जैसे दो आंखें हो, और उनके बीच नाक सी हो।

परन्तु किसी किसी नारियल में इस प्रकार की दो आंखें न होकर केवल एक आंख ही होती है, ऐसे नारियल को एकाक्षी नारियल' कहते हैं।

सामान्यतः इस प्रकार के नारियल को 'लक्ष्मी का प्रतीक' माना जाता है, और कहा जाता है कि जिस घर के पूजा कक्ष में ऐसा नारियल होता है वह घर सदैव धन-धान्य से पूर्ण होता है।

पारद शिवलिंग

संसार में सबसे दुर्लभ पारद शिवलिंग कहा जाता है, विज्ञान के अनुसार पारे में कोई चीज नहीं घुलती और पारा अपने आप में निर्मल रहता है, साथ ही पारा ठोस होते हुए भी द्रव है, अतः हाथों में से फिसल जाता है, इसे पकड़ कर रखना कठिन है।

सर्वाधिक दुर्लभ यह इसलिए माना गया है कि पारे को बर्म नहीं किया जा सकता, क्योंकि गर्म करने से वह उड़ जाता है, साथ ही उसमें चांदी जैसी कठोर धातु का मिश्रण संभव नहीं होता, ऐसी स्थिति में अत्यन्त उच्चस्तरीय योगी ही अपनी 'प्राण ऊष्मा' से पारे को गर्म कर उसमें रजत का मिश्रण कर सकते हैं कहा जाता है कि इस प्रकार का पारद यदि लाख रुपये तोला भी मिल जाय तो सस्ता है।

इस प्रकार के पारद से शिवलिंग का आकार बनाया जाता है और विशेष मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, मुझे अपने गुरुभाई से इस प्रकार का लगभग पांच तोले पारद का शिवलिंग मिला था, जो आज भी सुरक्षित है।

हत्था जोड़ी

यह विरुपा' पौधे की किसी किसी जड़ में पाया जाता है, यह ७.३ सें मी. लंबा व ५.१ सें मी. चौड़ा होता है। इसमें दो खण्ड होते हैं जो आपस में जुड़े रहते हैं। प्रत्येक खण्ड के ऊपरी सिरे पर पांच पांच उंगलियों की आकृति सी होती है, कुल मिलाकर देखने पर ऐसा लगता है, जैसे कोई व्यक्ति हाथ जोड़कर खड़ा हो, यह पेड़ मध्य प्रदेश के अमरकटंक के जंगलों में पाया जाता है, साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि प्रत्येक विरूपा पौधे की जड़ में हत्था जोड़ी नहीं होती, यह किसी किसी पौधे की जड में ही पायी जाती है, इसीलिये यह दुर्लभ होती है।

रविवार को जमीन खोदकर इस हत्था जोड़ी को सावधानी से जड़ से अलग कर लिया जाता है तथा इसे तेल के कटोरे में रखा जाता है, पाठकों को आश्चर्य होगा कि नयी हत्था जोड़ी पन्द्रह दिन में आधा कीलो तिल्ली का तेल पी जाती है, या अपने आप में समाहित कर लेती है, पन्द्रह दिन के बाद इसे सिंदूर में रखा जाता है, इसका प्रयोग भी अनेक तांत्रिक साधनाओं में होता है।

हनुमान साधना के लिए शतावर का वृक्ष

द्रोण गिरि के जंगलों में ही शतावर का पेड़ पाया जाता है, ऐसे पेड़ संख्या में बहुत कम होते हैं, तथा घने जंगलों में होते हैं, प्रकृति की कुछ ऐसी ही लीला है कि यह पेड़ जब १५१ सें.मी. का होता है तब इसकी शाखाओं से पत्ते फूटने लगते हैं और तब पेड़ स्वतः ही मुरझाकर

समाप्त हो जाता है, पर एक आध पेड़ पत्तों के आने के बाद भी जीवित बचा रह जाता है।

इसका पत्ता कुछ कुछ श्याम रंग लिये होता है, तथा आकार में १०.२ से.मी चौड़ा तथा १५.२ से मी. लम्बा होता है, इसकी शक्ल लगभग बड़ के पत्ते से मिलती जुलती है।

इस पेड़ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके प्रत्येक पत्ते पर 'द्रोण पर्वत उठाये हनुमान' की शक्ल अंकित होती है, जो कि स्वाभाविक होती है, पाठकों को पढ़कर भले ही आश्चर्य हो, पर वे स्वयं इसकी परीक्षा कर सकते हैं। पानी में इस पत्ते को चाहे महीनों पड़ा रहने दें, फिर भी यह चित्र नहीं मिटता, हनुमान साधना में इस पत्र का विशेष महत्व है।

मुझे इस प्रकार का पता मसूरी से आगे लाल टिब्बा स्थान के पास 'पगला बाबा' से मिला था जिन्हें 'वलाबल साधना' की सिद्धि प्राप्त थी।

दमा का इलाज : काली हल्दी

मध्य प्रदेश के मंडला जिले में यह काली हल्दी पैदा होती है, पर वहां के कुछ आदिवासी लोगों को ही इसका ज्ञान है। यह अत्यन्त दुर्लभ पदार्थ है, तांत्रिक प्रयोगों में इसका उपयोग होता है, सिद्ध सूत का निर्माण बिना इसके संभव नहीं है। काली हल्दी को घिस कर नित्य एक चम्मच पानी के साथ घिसा हुआ लेप पी लिया जाय तो मात्र एक सप्ताह में पुराने से पुराना दमा ठीक हो जाता है, मैंने कई पुराने दमा के रोगियों पर इसका प्रयोग किया है, और हर बार मुझे सफलता मिलती रही है।

मीन मुक्तक

समुद्र में पायी जाने वाली एक विशेष मछली के सिर से यह मोती प्राप्त होता है जिसका आकार बाजरा के दाने जितना होता है, इस मछली को कहीं कहीं 'उकत्या' मछली भी कहते हैं, यह मोती आकार-प्रकार में छोटा होते हुए भी विशेष सिद्धिप्रद माना गया है, तांत्रिक क्षेत्र में कई प्रकार से इस मोती का उपयोग किया जाता है।

गंगोत्री के प्रसिद्ध संत घुरुड़ स्वामी ने इस प्रकार का मुक्तक सिद्ध कर अपनी दाहिनी आंख में संजो रखा है, इस प्रकार की मछली का ज्ञान मछुआरों को या मछली विशेषज्ञों को ही होता है, यह दुर्लभ किस्म की मछली मानी गयी है, यह मछली भी यौवनावस्था में ही मुक्तक पैदा करती है, इसीलिए इस प्रकार का मुक्तक दुर्लभ कहा गया है।

दक्षिणावर्ती शंख

शंख या तो वामावर्ती होते हैं या दक्षिणावर्ती, पर अधिकतर शंख वामावर्ती होते है, इसीलिये यह दक्षिणावर्ती शंख महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ है, जिसका मुंह दक्षिण भाग की ओर खुलता है उसे दक्षिणावर्ती शंख कहते हैं।

दक्षिणावर्ती शंख को लेकर काफी ठगी देखी गयी है, इसका मूल कारण इसके बारे में सही जानकारी नहीं होना है, इस शंख के भी तीन भेद होते हैं :

१-नर २-मादा ३-नपुंसक

मादा एवं नपुंसक दक्षिणावर्ती होते हुए भी महत्वहीन हैं, क्योंकि फलप्रद एवं दुर्लभता मात्र नर दक्षिणावर्ती शंख की ही मानी गयी है।

कटे अंग जोड़ने वाली काली तूंबी :

साधुओं के पास जो जलपात्र होता है, वह एक विशेष फल का खोखला भाग है, इसे तूंबी या तुम्बा कहा जाता है, इसका रंग पीला या मटमैला होता है।

पर राजस्थान के घने जंगलों में कई बार काली तूंबी पैदा हो जाती है ऐसा बहुत कम होता है इसीलिए इसे दुर्लभ कहा गया है, तांत्रिक क्षेत्र में इसका विशेष महत्व है।

स्वामी प्रबुद्धानंद जी के साथ लगभग छह महीने तक रहने का मौका मिला था, उन्होंने इसका विशेष प्रयोग बताया था।

काली तूंबी के गिर को दस वर्ष पुराने गुड़ में घिसा जाता है, जिससे वह एकाकार हो जाता है और लेप सा बन जाता है यह कहा जाता है कि यदि किसी व्यक्ति के

शरीर का कोई हिस्सा किसी तेज धार से कट जाये तो पांच मिनट के अन्दर वह कटा हुआ भाग भर जाता है, और दर्द जाता रहता है, कटी हुई चमड़ी भी इस तरह मिल जाती है कि मालूम ही नहीं पड़ता कि कोई स्थान कटा हुआ भी था।

अमरकंटकी :

यह हिमालय के ऊपरी इलाकों में विशेषकर यमुनोत्री के मार्ग में पायी जाती है, इसका पौधा मात्र ४५ से ६० सें०मी० ऊंचा होता है, पूरे पौधे पर पत्ते नहीं होते तथा डालियां कटीली होती हैं, लम्बे लम्बे कांटों से ये डालियां भरी होती है, यह पौधा हरा बना रहता है।

इसकी जड़ संसार की सबसे कीमती जड़ मानी गयी है, आश्चर्य की बात यह है कि इसकी जड़ ज्यादा गहरी नहीं होती तथा मात्र १५ से०मी० लम्बी होती है निकालने पर लकड़ी के टुकड़े के समान दिखाई देती है, यह जड़ पानी में रखने पर घुलने लगती है और पानी पीले रंग का हो जाता है इसके भी अनेक गुण बताये गये हैं।

यह विश्व आश्चर्यजनक एवं अद्भुत विशेषताओं से सम्पन्न है, आवश्यकता है उन विशेषताओं को ढूंढ निकालने की, विश्व के सामने रखने की, और उनकी वास्तविकताओं से परिचित कराने की। मेरे निर्देशन मे भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र (डा० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर, राजस्थान) ने इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण शोध एवं खोज की है और अद्यतन कार्यरत है।

—-——

प्रकाशित

जिज्ञासा

०कुण्डलिनी जागरण हो रही है ? इसका पता कैसे लगता है ? ममता : नैनीताल

आसन, प्राणायाम, भस्त्रिका या गुरू द्वारा शक्तिपात से मूलधार उत्थित या जाग्रत होने लगता है, लगभग ऐसी ही स्थिति में कुंडलिनी भी जाग्रत होने लगती है। योग का अभ्यास तो बिना गुरू के भी किया जा सकता है, परन्तु कुंडलिनी-जागरण-साधना में गुरू का मार्ग-दर्शन अनिवार्य है क्योंकि यह बड़ा ही शक्तिशाली और पेचीदा अभ्यास क्रम है, यह जरूरी नहीं कि मूलाधार में कुंडलिनी जाग्रत होते ही साधक को पता चल जाय, कभी-कभी तो साधक का मूलाधार में कुंडलिनी-जागरण का पता ही नहीं चलता, जब वह मणिपूर चक्र तक पहुँच जाती है तब जाकर साधक को पता चलता है।

कुंडलिनी जागरण प्रक्रिया में साधक-फिर चाहे वह स्त्री हो या पुरुष-का व्यवहार असामान्य सा हो जाता है वे बेसऊर, भ्रान्त, थकित, बिखरे-बिखरे से लगते हैं, उनके पेट में, नाभिप्रदेश में या कंधों में असहनीय दर्द होने लगता है जरूरत से ज्यादा थकावट निद्रा या बेचैनी होने लगती है उसका व्यवहार चिड़चिड़ा सा हो जाता है, कुछ स्त्रियों को तो कुंडलिनी जागरण में संतान-प्रसव जितना दर्द अनुभव होने लगता है।

पर कुछ दिनों बाद स्वतः ही सब सामान्य हो जाता है साधक के चेहरे पर एक अलौकिक आभा और चमक आ जाती है, उसका सारा शरीर संतुलित देदीप्य सा हो जाता है।

०क्या योग साधना से दमा रोग मिटाया जा सकता है। किशोर : दिल्ली

हां ! दमे के रोगी को प्रातः कुंजल, सूर्योदय के समय जलनेति, पवनमुक्तासन, भुजंगासन तथा पश्चिमोत्तासन नियमित रूप से करना चाहिए। मात्र दो महीने में पुराना दमा भी समाप्त होता देखा गया है।

०क्या परकाया-प्रवेश-विद्या भारत में जीवित है, किन किन लोगों को यह विद्या ज्ञात है ?

निश्चय ही तंत्र की यह श्रेष्ठ विद्याओं में से एक है भारत में कुछ तांत्रिकों को यह विद्या पूर्ण रूप से ज्ञात है त्रिजटा अघोरी बाबा बोधन आदि तांत्रिकों ने इन क्रियाओं को कई बार सम्पन्न कर के दिखाया है।

०कई बार साधना नियमित रूप से करने पर भी सफलता नहीं मिलती, इसका क्या कारण है ?

जब तक पूर्व जीवन के पापों का क्षय नहीं होता, तब तक साधना में सफलता नहीं मिलती। इन पापों का क्षय गुरु द्वारा निर्दिष्ट साधना सम्पन्न करने से या गुरु चरणों में लिखकर समर्पित कर देने से हो जाता है।

०क्या साधना में सफलता के लिये गुरु द्वारा दीक्षा लेनी आवश्यक है ? हेम : लखनऊ

आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है "कुलार्णव तंत्र" में बताया है—दीक्षा मूलो जपः सर्वे, दीक्षा मूल पर तपः' अर्थात् दीक्षा के बाद ही जीवन में जप, तप साधना आदि में सफलता प्राप्त हो पाती है।

०मेरी पुत्री सुन्दर सुशील एवं शिक्षित है, पर प्रयत्न करने पर भी उसकी सगाई या शादी संभव नहीं हो पाती, क्या मंत्र-तंत्र आदि में इसके लिए कोई विधान है ? प्रकाश : पटना

महार्णव तंत्र में बताया है कि "गौरी यंत्र" इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त साधन है, विशिष्ट क्रिया एवं अनुष्ठान से यह सिद्ध गौरी यंत्र, कन्या गले में धारण करे

तो शीघ्र ही इच्छित वर प्राप्ति संभव है ।

०क्या कोई ऐसा यंत्र है, जो भोग और मोक्ष दोनों में समान रूप से सहायक हो, जो जीवन में अतुलनीय धन ऐश्वर्य, व्यापार वृद्धि, आर्थिक-सहायता यश सम्मान के साथ-साथ भगवद् भक्ति एवं मोक्ष प्राप्ति में भी समर्थ हो। शशि : मद्रास

एक मात्र "कनकधारा यंत्र" ही ऐसा यंत्र है जो भोग और मोक्ष दोनों में समान रूप से सहयोगी एवं उपयोगी है, घर में इस यंत्र की उपस्थिति ही समस्त प्रकार का कल्याण एवं उन्नति है, इसे घर में रखने के बाद किसी क्रिया या विधि विधान की आवश्यकता नहीं, मात्र प्रातः सायं उसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगाना ही पर्याप्त है ।

०क्या मैं आपके केन्द्र में आकर योग-साधना सीख सकता हूं ? हरि : चंद्रपुर

मेरा घर सबके लिए खुला है, यदि आप उपयुक्त पात्र हैं तो निश्चय ही सीख कर सफलता प्राप्त कर सकते है ।

०पूर्णाभिषेक क्या है ? वीरेन्द्र : न्यूयार्क

गुरु द्वारा शिष्य का दीक्षा संस्कार होने के बाद गुरु उसे साधना कार्य में प्रवृत्त करता है, और कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया शुरू होती है, जब कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब गुरु द्वारा तीन अभिषेकों में से प्रथम पूर्णाभिषेक सम्पन्न होता है, यह दिन शिष्य के लिये अत्यन्त गौरवशाली दिन होता है ।

०दारिद्रय विनाशक धनदा-लक्ष्मी मंत्र कौनसा है ?

॥ "ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं दारिद्रय विनाशिन्यै धनदायै ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥

०लक्ष्मी से संबंधित मंत्र, जप या अनुष्ठान करते समय किस प्रकार की माला का प्रयोग उचित है ?

कमल गट्टे की माला इस प्रकार के कार्यो के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है, पर ऐसी माला जीवन्त, चैतन्य, प्राण युक्त एव मंत्र सिद्ध हो तो निश्चित सफलता मिलती है ।

०क्या किसी साधना से वर्तमान जीवन से पहले का जीवन चलचित्र की भांति देखा जा सकता है ?

हां ! "गतानुगत साधना" से इस जीवन से पहले के छः जीवन चलचित्र की भांति देखे जा सकते हैं ।

०तांत्रिक क्षेत्र में सूर्य सिद्धांत क्या है ?

एक ऐसी साधना-प्रक्रिया जिससे सूर्य की किरणों के माध्यम से तुरन्त किसी भी पदार्थ की रचना की जा सके ।

०क्या हमारे शास्त्र ग्रन्थों में प्रामाणिक रूप से कहीं पर सोना बनाने की विधि दी हुई है ? क्या उसके अनुसार वर्तमान समय में सोना बनाया जा सकता है ? विक्रम : काशीपुर

"श्री सूक्त" लक्ष्मी का प्रसिद्ध सूक्त है, गहराई के साथ देखें तो उसके प्रथम तीन सूक्तों में सोना बनाने की विधि प्राथमिकता के साथ दी हुई है, वर्तमान समय में भी उसके अनुसार सोना बनाया जा सकता है ।

रामचरित मानस मंत्र-सिद्धि

तुलसीदास कृत रामचरित मानस सम्पूर्ण विश्व में विख्यात और अद्भुत ग्रन्थ है जिसमें श्री राम की अद्भुत, अनुपम और आदर्श लीलाओं का वर्णन होने के साथ-साथ उसमें भक्ति की महिमा को प्रमुखता से वर्णन किया है, इस प्रकार रामचरित मानस में जो भी दोहे, चौपाइयां सोरठे आदि हैं, वे अपने आप में राममय है और इस प्रकार से ये स्वतः ही साक्षात् मंत्र स्वरूप हैं ।

रामचरित मानस काव्यमय होने के साथ ही साथ विविध रसोत्पादक है इस काव्य-धारा में गोस्वामी संत तुलसीदास के हृदय की अनुपम भक्ति की अजस्रधारा प्रवाहित हुई है, इसी के कारण रामचरित मानस की प्रत्येक पंक्ति स्वतः ही प्राणवान सशक्त और वेगवान है और इसीलिये मानस की कुछ विशिष्ट चौपाइयों और दोहों को वेद मंत्र के समान पवित्र और मंत्र रूप माना है, जिनका उच्चारण, मनन, चिन्तन, सम्पुट आदि से साधकों को आशातीत लाभ होता है ।

जब भी कोई पंक्ति ईश्वर के अंश से प्राणवान हो जाती है तो उसमें एक विशिष्ट चैतन्य और दिव्यता आ जाती है । रामचरित मानस की प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्द भगवान के गुणानुवाद का साक्षात रूप है इसीलिये इन शब्दों में दिव्यता का समावेश हुआ है और यह प्राकृत ग्रन्थ से ऊपर उठ कर एक विशेष महिमा मण्डित हो सका है। मानस की प्रत्येक चौपाई और प्रत्येक छन्द साधक के लिये मंत्र स्वरूप है, अतः साधक को जिस कामना पूर्ति में रुचि हो उसे मंत्र रूप में उसी चौपाई दोहे या सोरठे का सम्पुट के समान प्रयोग करना चाहिए, इससे उसे निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है ।

यह बात केवल अनुमान पर आधारित नहीं है अपितु वर्तमान समय में भी मानस के कई भक्त और साधक हैं उनको, इस प्रकार का सम्पुट देकर पाठ करने से विशेष लाभ हुआ है तथा कामना पूर्ति में सफलता प्राप्त हुई है ।

रामचरित मानस पाठ

रामचरित मानस भक्ति प्रधान ग्रन्थ होने के साथ-साथ साधना प्रधान ग्रन्थ भी है । इसमें लोक कल्याणकारी मंत्र हैं और इन मंत्रों का सकाम और निष्काम दोनों प्रकार से अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है ।

सर्व प्रथम साधक को प्रातःकाल उठकर लगभग नौ बजे स्नान आदि से निवृत्त होकर आसन पर बैठ जाना चाहिए । सामने आसन बिछाकर श्री राम की मूर्ति या चित्र स्थापित करना चाहिए, यह चित्र राम लक्ष्मण, सीता और हनुमान युक्त हो ।

इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर पूर्ण विधि विधान के साथ श्री राम की पूजा करनी चाहिए और अपने सामने रामचरित मानस ग्रन्थ रखकर उसकी भी पूजा सम्पन्न करनी चाहिए, इस बात का ध्यान रहे कि ग्रन्थ के पास ही हनुमानजी के लिये लाल वस्त्र का आसन बिछा हो, ऐसा कहा जाता है कि जहां पर भी रामचरित मानस का पाठ होता है उस पाठ को सुनने के लिये वहां श्री हनुमान निश्चित रूप से उपस्थित रहते हैं ।

इसके बाद रामचरित मानस का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए और दूसरे दिन उसी समय अर्थात् २४ घन्टों में पूरे रामचरित मानस का पाठ सम्पन्न हो जाना चाहिए, इस पाठ में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि पाठ का क्रम टूटे नहीं और २४ घन्टे अनवरत रूप से पाठ होता रहे । यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जो प्रधान ग्रन्थ है और प्रधान ग्रन्थ के सामने जो आसन बिछा हुआ है उस आसन पर कोई न कोई अवश्य बैठा रहे और पाठ करे, यह पाठ सस्वर और उच्चारण युक्त होना चाहिए ।

दूसरे दिन लगभग नौ बजे जब पाठ समाप्त हो तो श्री राम और हनुमान की भक्तिभाव के साथ आरती होनी चाहिए।

निष्काम पाठ में मात्र पाठ होता है परन्तु सकाम पाठ में प्रत्येक विश्रान्ति के बाद सम्पुट दिया जाता है, यह सम्पुट एक बार बोला जाता है।

कुछ ग्रन्थों में मानस-पाठ समाप्ति के बाद हवन करने का भी विधान है। सम्पूर्ण पाठ होने के बाद १०८ आहुतियां सम्पुट मंत्र की दी जाती हैं, इस यज्ञ में अष्टांग हवन किया जाता हैं, अष्टांग हवन के लिये निम्न बारह पदार्थ प्रयुक्त किये जाते हैं :

१. तिल २. जौ ३. चावल ४. चीनी ५. श्वेत चन्दन चूर्ण ६. अगर ७. तगर ८. कपूर ९. केसर १०. नागर मोथा ११. पंच-मेवा-गोला, किसमिस, छुआरा, अखरोट, बादाम आदि १२. घृत।

प्रत्येक आहुति लगभग १० ग्राम वजन की होनी चाहिए. यदि साधक चाहे तो इससे कम वजन की आहुति अग्नि में छोड़ सकता है, अन्त में सम्पुट मंत्र पूरा होने के बाद अन्त में 'स्वाहा' या'श्री रामाय स्वाहा' शब्द बोलकर आहुति अग्नि में छोड़नी चाहिए, अन्त में पूर्णाहुति शुद्ध घृत की देनी चाहिए।

इस प्रकार रामचरित मानस का अखण्ड पाठ निश्चय ही सिद्धि और सफलता देने में सहायक है।

मैं नीचे विविध कामनाओं की पूर्ति के लिये कुछ मानस-मंत्र दे रहा हूँ जिससे कि सामान्य साधक लाभ उठा सके।

धन प्राप्ति के लिए :

जिमि सरिता सागर महुँ जाही,
जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख सम्पत्ति बिनहि बोलाए।
धरमसील पहं जाहिं सुभाएं ॥

दरिद्रता मिटाने के लिए :

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद घन दारिद दवारि के॥

वैभव सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये :

जे सकाम नर सुनहि जे गावहि।
सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहि॥

जीविका प्राप्ति के लिए :

बिस्व भरन पोषण कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई॥

विघ्ननाश के लिये :

सकल विघ्न व्यापहि नहि तेही।
राम सुकृपा बिलोकहि जेही॥

सर्व विपत्ति नाश के लिए :

राजिव नयन धरे धनु सायक।
भगत विपत्ति भंजन सुखदायक॥

संकट नाश के लिये :

दीन दयाल विरुद सम्भारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

भूत-प्रेत बाधा निवारण के लिए :

प्रनवऊं पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

अपयश नाश के लिये :

रामकृपा अवरेब सुधारी।
बिबुध धारि भई गुनद गोहारी॥

शत्रुता नाश के लिए :

बयरू न कर काहू सन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई॥

मुकदमें में विजय प्राप्ति के लिए :

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विग्यान निधाना॥

आकर्षण के लिए :

जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥

विद्या प्राप्ति के लिए :

गुरु गृह गए पढन रघुराई।
अलप काल विद्या सब आई॥

यात्रा की सफलता के लिए :

प्रविसि नगर कीजे सब काजा।
हृदय राखि कौसलपुर राजा॥

विवाह होने के लिए :

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु व्याह
साज संवारि के।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुंअरि
लई हंकारि के॥

लड़ाई झगड़े में अभय प्राप्ति के लिए :

कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु अभय किए सुरवृन्द।
भालु कोस सब हरषे जय सुखधाम मुकुन्द॥

प्रभु कृपा प्राप्ति के लिए :

भगत बछल प्रभु कृपा निधाना।
श्री विश्वास प्रगटे भगवाना॥

मोक्ष प्राप्ति के लिए :

सत्यसंघ छांडे सर लच्छा।
काल सर्प जनु चले सपच्छा॥

ऐश्वर्य एव राजपद प्राप्ति के लिए :

लगे संवारन सकल सुर वाहन विविध विमान।
होई सगुन मंगल सुभद करहि अपछरा गान॥

भक्ति प्राप्ति के लिए :

भगत कल्पतरू प्रनत हित कृपा सिन्धु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम॥

परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए :

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी।
कवि उर अजिर नचावहिं बानी॥

मोरि सुधारिहि सो सब भांती,
जासु कृपा नहि कृपा अघाती॥

मनोरथ प्राप्ति के लिए :

मोर मनोरथु जानहु नीके।
बसहु सदा उर पुर सब ही के॥

इच्छित वर प्राप्ति के लिए :

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषि न जाइ कहि।
मजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

सर्व मनोरथ सिद्धि के लिए :

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारी।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहि त्रिसरारि॥

श्रेष्ठ पति प्राप्ति के लिए :

गावहि छवि अवलोकि सहेली।
सिय जयमाल राम उर मेली॥

आनन्दोत्सव के लिए :

प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहि सुमंगलचार।
एक प्रविसहि एक निर्गमहि भीर भूप दरबार॥

माया मोह की निवृत्ति के लिए :

तज्ज माया सेइअ परलोका।
मिटहि सकल भवसंभव सोका॥

पुत्र प्राप्ति के लिए :

प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान॥

सर्व सुख प्राप्ति के लिए

सुनहि बिमुक्त बिरत अरु बिषई।
लहहि भगति गति सपति नई॥

संशय, शोक, भय नाश के लिए :

संसय, शोक निबिड़ तम भानहि।
दनुज गहन घन दहन कृसानुहि॥
जनकसुता समेत रघुवीरहि।
कस न भजहु मंजन भव भीरहि॥

ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति के लिए :

साधक नाम जपहिं लय लाएं।
होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएं॥

सर्व रोग निवृत्ति के लिए :

रघुपति भगति सजीवन मूरी।
अनुपान श्रद्धा मति पूरी॥

सर्व पीड़ा नाश के लिए :

जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल।
सो कृपालु मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल॥

दुःखहरण के लिए :

करइ आरती आरतिहर के।
रघुकुल कमलबिपिन दिनकर के॥

हनुमानजी की प्रसन्नता के लिए :

सुमिरि पवनसुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू॥

समस्त प्रकार के दुःख आदि को शान्त करने के लिए

मगल भवन अमगल हारी,
द्रवहु सु दशरथ अजिर विहारी।
दीन दयालु विरुद संभारीः,
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

×××

ज्योतिष

राहुकाल. . . .

ज्योतिष शास्त्र में राहुकाल का विशेष महत्व है, इस काल में किसी भी प्रकार का प्रारंभ किया हुआ कार्य सफल नहीं होता, दक्षिण भारत में तो अधिकारी वर्ग तक राहुकाल में कोई निर्णय नहीं लेते, या महत्वपूर्ण फाइलों में हस्ताक्षर नहीं करते, यात्रा, शुभकार्य, लेन-देन, महत्वपूर्ण निर्णय आदि प्रत्येक कार्य में राहुकाल त्यागना ही उचित है।

पाठकों के हितार्थ अगले दो महीनों के राहुकाल स्पष्ट किये जाते है, जो कि स्टैंडर्ड समय के अनुसार है :

जनवरी ८१	फरवरी ८१
रविवार–४.३० से ६.०० सायं	४.३० से ६.०० सायं
सोमवार–राहुकाल नहीं	७.३० से ९.०० प्रातः
मंगलवार–३.०० से ४ ३० सायं	३.०० से ४.३० दोपहर
बुधवार–१२.०० से १.३० दोपहर	१२.०० से १.३० दोपहर
गुरुवार– १.३० से ३.०० दोपहर	१.३० से ३.०० दोपहर
शुक्रवार–१०.३० से १२.०० दोपहर	१०.३० से १२.०० दोपहर
शनिवार–९ ०० से १०.३० प्रातः	९.०० से १०.३० दोपहर

दारिद्रय निवारणार्थ लक्ष्मी प्रयोग

(दरिद्रता नाश के लिये लक्ष्मी से संबंधित कुछ अलभ्य व दुर्लभ प्रयोग)

साधकों और पाठकों के लिये लक्ष्मी से संबंधित कुछ दुर्लभ प्रयोग दे रहा हूँ, इन मंत्रों का प्रयोग कोई भी गृहस्थ, साधक या स्त्री कर सकती है, ये मंत्र गोपनीय होने के साथ-साथ पूर्ण प्रभावशाली एवं तुरन्त फलदायक है।

इन मंत्रों को सिद्ध करने में यदि कहीं त्रुटि भी रह जाती है, तो कोई हानि नहीं होती अतः किसी भी साधक को बिना संकोच इन मंत्रों का प्रयोग करना चाहिये।

लक्ष्मी बीज मंत्र प्रयोग

यह एक अक्षर का लक्ष्मी बीज मंत्र है अतः साधक चाहे तो इस बीज मंत्र का मानसिक जप लगातार कर सकता है। चलते, बैठते, उठते, सोते समय भी इस मंत्र का जप मन ही मन नियमित रूप से होता रहना चाहिए, इससे निश्चय ही उसे आर्थिक उन्नति तथा सफलता प्राप्त होती है। इसके लिये किसी भी प्रकार का विधि-विधान आदि की आवश्यकता नहीं है और न मंत्र को सिद्ध करने की जरूरत है। सामान्यतः पांच लाख जप होने पर सफलता दिखाई देने लग जाती है पर इस मंत्र की गणना करने की जरूरत नहीं है।

मंत्र

(श्रीं)

चतुराक्षरी लक्ष्मी मंत्र

यह मंत्र पूर्ण सफलतादायक है तथा साधक को या गृहस्थ को प्रातः नित्य एक माला इस मंत्र की जपनी चाहिये, सवा लाख मंत्र जपने पर यह सिद्ध होकर सफलता देने लग जाता है। साधक को स्नान कर सामने लक्ष्मी का चित्र रख कर नित्य एक माला या पांच मालाएं नियमित रूप से फेरनी चाहिये। सवा लाख मंत्र जप होने के बाद भी साधक चाहे तो आगे मंत्र जप कर सकता है। इसके लिये अन्य किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यता नहीं है। इसमें किसी भी माला का प्रयोग हो सकता है परन्तु यदि कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाय तो विशेष सफलता प्राप्त होती है, यह माला मंत्र-चैतन्य, मंत्र-सिद्ध, और प्राण-प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिये।

मंत्र

(ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं)

दशाक्षर लक्ष्मी मंत्र

पांच लाख मंत्र जप होने पर यह सिद्ध होता है, नित्य तीन मालाएं नियमित रूप से होनी चाहिये तथा इसके लिये कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाना चाहिये, जब पांच लाख मंत्र जप पूर्ण हो जाए तब एक कुमारी कन्या को खीर का भोजन करा कर वस्त्र दान देना चाहिये इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और उसके जीवन में किसी भी दृष्टि से किसी भी प्रकार का आर्थिक अभाव नहीं रहता।

मंत्र

(ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा)

व्यापार लक्ष्मी मंत्र

यह मंत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है और दस लाख मंत्र जप होने पर इसे सिद्ध माना जाता है। इस मंत्र का श्रीयंत्र के सामने जप किया जाय तो विशेष सफलता होती है। श्रीयंत्र के सामने अगरबत्ती व दीपक लगा कर

नित्य एक माला या तीन माला फेरनी चाहिये, कमल गट्टे की माला आवश्यक है। जब दस लाख मंत्र जप हो जाय तब उस धातु निर्मित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त श्रीयंत्र को दुकान में या व्यापार-स्थल पर स्थापित कर देना चाहिये, इस कलियुग में भी व्यापारी बन्धु इस यंत्र एवं मंत्र का चमत्कार अनुभव कर सकते है।

मंत्र

ऊं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
स द श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

दारिद्रय विनाशक 'लक्ष्मी' मंत्र

जिसके भाग्य में दरिद्रता लिखी हो, जिसके जीवन में किसी भी प्रकार की आर्थिक उन्नति उपाय करने पर भी नहीं होती हो, उसके लिये यह मंत्र रामबाण की तरह है, नित्य प्रातः एक, तीन या पांच मालाएं निम्नलिखित मंत्र की फेरनी चाहिए। माला कमल गट्टे की होनी आवश्यक है। माला फेरते समय सामने लक्ष्मी का चित्र तथा शुद्ध घृत का दीपक जलते रहना चाहिये। १२ लाख मंत्र जप होने पर यह लक्ष्मी सिद्ध हो जाती हैं।

मंत्र

ऊं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं
दारिद्रय विनाशकं
जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

सिद्ध लक्ष्मी मंत्र

जीवन में सभी प्रकार की उन्नति तथा भौतिक सुख प्राप्त करने के लिये यह मंत्र सिद्ध करना चाहिये, इस मंत्र को पुरुष या स्त्री कोई भी सिद्ध कर सकता है। इसके लिये कोई विशेष विधि विधान की आवश्यकता नहीं है। १२ लाख मंत्र जप होने पर यह लक्ष्मी सिद्ध हो जाती है तथा उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

साधक को चाहिये कि वह सामने सिद्ध लक्ष्मी का चित्र रक्खे और अगरबती व दीपक लगा कर कमल गट्टे की माला से जितना भी हो सके निम्नलिखित मंत्र जप करें। जब १२ लाख मंत्र जप हो जाए तो पांच कुमारी कन्याओं को भोजन करा कर उन्हें वस्त्र व द्रव्य दे। इस प्रकार सिद्ध लक्ष्मी होने पर धन, धान्य, जमीन, भवन, कीर्ति आयु, यश, प्रसिद्धि, वाहन, पुत्र, स्त्री, स्वास्थ्य तथा समस्त प्रकार के भौतिक सुख स्वतः ही प्राप्त होने लगते हैं।

मंत्र

(ऊं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः)

वास्तव में मैंने ऊपर जो कुछ लक्ष्मी से संबंधित मंत्र व प्रयोग बताए हैं, वे अनुभूत हैं. मैंने स्वयं इन्हें सिद्ध करके देखा है, और ये पूर्ण रूप से सहायक तथा फलदायक रहे हैं। यहीं नहीं अपितु जिन साधकों ने या गृहस्थ व्यक्तियो ने इन मंत्रों को सिद्ध किया हैं व आज भौतिक दृष्टि से अत्यन्त उन्नति पर हैं, वास्तव में ही पाठकों को इन मंत्रों को सिद्ध कर अनुभव तथा सफलता प्राप्त करनी चाहिये।

कुछ प्रामाणिक सिद्ध साबर मंत्र

जीवन में मंत्रों का सर्वोपरि प्रभाव है. इनमें भी साबर-मंत्र अत्यन्त गोपनीय और रहस्यपूर्ण होते है। साबर मंत्रों की यह विशेषता होती है कि वे सरल भाषा में होने के साथ साथ निश्चित प्रभाव पूर्ण और फलदायक होते हैं। इन मंत्रों को सिद्ध करने में किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी नहीं आती, कोई भी गृहस्थ, साधु या सन्यासी इन मंत्रों को सिद्ध करके समाज की भलाई कर सकता है।

इस पत्रिका के द्वारा ये साबर-मंत्र पहली बार प्रकाश में आ रह हैं और ये सभी मंत्र अनूभूत हैं साथ ही साथ लेखक ने इन मंत्रों को सिद्ध करके देखा है कि ये मंत्र निश्चत प्रभावपूर्ण हैं, इन मंत्रों को पुरुष या स्त्री कोई भी सिद्ध कर सकता है।

भूत प्रेत रोग आदि दूर करने का मंत्र

ऊं नमो आदेश गुरु को घोर घोर इन घोर काजी की किताब घोर, मुल्ला की बांग घोर, रेगर की कुंड घोर, धोबी की कुंड घोर, पीपल का पान घोर, देव की दिवाल घोर, आपकी घोर बिखेरता चल, परकी घोर बैंठाता चल, वज्रका किवाड़ तोड़ता चल, सारका किवाड़ तोड़ता चल, कुनकुनसो बंद करता चल, भूत को, पलीत को, देव को, दानवको दुष्टको, मुष्टको, चोटको, फेटको, मेलेको घरेले को, उलकेको, बुलकेको, हिडके को, भिडके को, ओपरीको पराई को, भूतनी को, पलीतनी को, डंकिनीको स्यारीको, भूचरी को, खेचरी को, कलुए को मलबे को, उनको अधबायके तापको तिजारी को, माया की मथबाय को, ममरा की पीडा को, पेटकी पीड़ा को, सांस को, कांसको, मरे को. मुसाण को, कुएकुएसा, मुसाण, कचिया मुसाण भूकिया मुसाण, कीटिया मुसाण, चीडी चोपटा का मुसाण, नुह्या मुसाण, इन्होंको बंद करि, एडो की एडी बंध करि, पीडाकी पीडी बंध करि, जांघकी जाडी बंध करि कटचा की कडो बध करि, पेट की पीड़ा बंध करि, छाती की शल बंध करि, सरिकी सीस बंधकरि, चोटी की चोटी बंध करि, नौनाडी बहत्तर कोठा रोमरोम में घर, पिंडमें दखलकर, देश बगाल का मनसारा मसेवडा, आकर मेरा कारज सिद्ध न करे तो गुरू उस्ताद से लाजे, शब्द साचा पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

विधान

यह मंत्र इसलिये महत्वपूर्ण है, कि सरल है, अभी तक गोपनीय रहा है और लेखक ने इसे सिद्ध करके देखा हैं कि यह पूर्ण रूप से प्रभावशाली है, साथ ही सभी प्रकार के ज्वर, ग्रह-दोष, भूत प्रेत पिशाच आदि के उपद्रव आदि को समाप्त करने, घर की बाधा दूर करने आदि में पूर्ण रूप से सहायक है।

सिद्ध करने का तरीका

रविवार को साधक कपड़े पहन कर जंगल में या घर के एकान्त में दक्षिण की तरफ मुंह करके बैठ जाय। सामने लोबान का धूप लगा ले तथा अपने शरीर पर इत्र लगाले। साधक किसी भी प्रकार के कपड़े पहिन सकता है, तेल का दीपक बराबर लगाये रखे। तेल किसी भी प्रकार का हो सकता है। इस प्रकार यह मंत्र ११ रविवार करने पर सिद्ध होता है, तथा प्रत्येक रविवार को १०१ माला इस मंत्र की फेरनी चाहिए। जब ११ रविवार पूरे हो जाय, तो उसदिन जंगल में जाकर कुछ भांग या सुलफा छोड़ देना चाहिए।

मंत्र सिद्ध होने पर सात बार इस मंत्र को पढ़े तो सभी प्रकार की बाधाएं, भूत-प्रेत आदि को दूर कर सकता है। सिद्ध होने पर साधक को चाहिए कि वह

सामने उपद्रवग्रस्त व्यक्ति को बैठा कर हाथ में लोहे की कील ले कर इस मंत्र को सात बार पढ़ें तो निश्चय ही भूत-प्रेत चिल्लाता हुआ भाग जाता है, और यदि किसी भी प्रकार का बुखार हो तो वह उसी समय उतर जाता है।

नजर झाड़ने का मंत्र

ऊं नमो मत्य नाम आदेश गुरूको, ऊं नमो नजर जहां पर पीर न जानी, बोले छलसों अमृतवानी, कहो नजर कहांते आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरो कहा ठाम, किसकी वेटी कहा तेरो नाम, कहां से उडी कहां को जाया, अवही वसकर ले तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लाय, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चूहडी चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताहोके शिर पडे जाहर पीर नजर से रक्षा करे, मेरी भक्ति, गुरूकी शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

विधान

यह सही तथ्य है कि बालक को, सुन्दर स्त्री को या किसी को भी नजर लग सकती है, नजर लगने पर वह बीमार हो जाता है, उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता और दिनों दिन वह शारीरिक रूप से कमजोर होता जाता है तथा कुछ समय बाद उसकी मृत्यु भी हो जाती है।

सिद्ध करने का तरीका

यह मन्त्र जप मंगलवार से प्रारम्भ कर शनिवार को समाप्त करना चाहिए तथा प्रतिदिन इसकी १५१ मालाएं फेरनी चाहिए। साधक को दक्षिण की तरफ मुंह कर तेल का दीपक लगा कर इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए। शनिवार की शाम को जब मालाएं पूरी हो जाए तो एक कीलो गेहूँ उबाल कर जंगल में जाकर फेंक देने चाहिए तथा फेंकने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। इस प्रकार से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

सिद्ध होने पर मोर पंख से मात्र तीन बार इस मन्त्र को पढ़ कर नजर झाड़ दे तो निश्चय ही उसकी नजर उतर जाती है और वह स्वस्थ हो जाता है।

खूनी बवासीर दूर करने का मंत्र

ऊं उमती उमती चल स्वाहा॥

विधान

एक लाख मन्त्र जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। सिद्ध होने पर जब कोई बवासीर का मरीज सामने आवे तब इस मन्त्र को २१ बार पढ़ कर लाल सूत में गांठ दे, इस प्रकार तीन गांठे दे कर बवासीर के रोगी के दाहिने पैर के अंगूठे में वह लाल सूत बांध दें तो खूनी बवासीर समाप्त हो जाता है। इस प्रकार का विधान सात दिन तक नियमित रूप से करना चाहिए।

सुख प्रसव मन्त्र

यदि कोई गर्भिणी स्त्री कष्ट से दुखी हो रही हो और प्रसव नहीं हो रहा हो तो निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर दूध को अभिमंत्रित कर स्त्री को पिलावे तो तुरन्त सुख-प्रसव हो जाता है।

यह मन्त्र २१ हजार जपने से सिद्ध होता है और सिद्ध होने पर मात्र तीन बार मन्त्र पढ़कर दूध को अभिमंत्रित कर गर्भिणी को पिला देने से कार्य सफल हो जाता है।

मंत्र

ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनी चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय-विकासय स्वाहा॥

बिच्छू झाड़ने का मंत्र

ऊंनमो आदेश गुरूको, कालो बिच्छू कांकरवालो, उत्तर बिच्छू न कर टालो, उतरे तो उतारूं, चढे तो मारूं गरुडमोरपंख हकालूं, शब्द साचा, पिंड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

विधान

एक लाख जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। जब यह मंत्र सिद्ध हो जाय तो जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा है उसे सामने बिठा कर उस स्थान पर दोनों हाथों से तेजी से हाथ फेरते हुए मात्र तीन बार इस मंत्र को पढ़ने से बिच्छू उतर जाता है और व्यक्ति हंसता हुआ घर जाता है।

सर्प झाडने का मंत्र

इस मंत्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके दूसरे दिन शाम तक इस मंत्र का लगातार जप करने पर यह मन्त्र

सिद्ध हो जाता है, इसमें गणना नहीं होती, मात्र शिव रात्रि के प्रारम्भ से दूसरे दिन सूर्यास्त तक जितना भी मंत्र जपा जाय वही सही है, पर आसन से उठना नहीं चाहिए।

जब मंत्र सिद्ध हो जाय तो जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो व्यक्ति के उस स्थान पर इस मंत्र को तीन बार पढ़ कर बुहारी से झाड़ दे तो निश्चय ही सर्प-विष उतर जाता है और व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है।

मंत्र

ऊंनमो सर्पा रे, तू थूलमथूला मुख तेरा बना कमलका फूला, रे सर्पा बांधू तेरी दादी मुवा, जिनने तोको गोद खिलाया, सर्पा रे सर्पा बांधू तेरा रतन कटोरा, जा में तोकू दूध पिलाया, सर्पा बीज, कीलनी बीज पान, मेरा कीला करे जो घाव, तेरी डाढ भस्म हो जाय, गुरु गोरख भी जाय जलाय, ॐ नमो आदेश गुरू को मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

बिक्री बढ़ाने का मंत्र

भंवरवीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे जो डंडी, बिके जो माल, भवरवीर सोखे नहि जाय।

सिद्ध करने का तरीका

रविवार के दिन एक कीलो काले उड़द अपने सामने रख कर सूर्योदय से सूर्यास्त तक इस मंत्र का नियमित रूप से जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जब यह मंत्र सिद्ध हो जाय तब उन काले उड़दों में से कुछ उड़द ले कर २१ बार मन्त्र पढ़ कर दुकान में बिखर देवे, इस प्रकार तीन रविवार तक करने पर दुकान की बिक्री दुगनी-तिगुनी हो जाती है, यह निश्चित है।

जैसा कि मैंने बताया है, साबर मंत्र सरल भाषा में होते हैं और आज के अनास्था तथा वैज्ञानिक युग में विश्वास नहीं होता कि ये मन्त्र इतने शक्तिशाली हैं और इन मन्त्रों से कार्य सिद्ध किये जा सकते हैं।

परन्तु साधकों ने इन मंत्रों को सिद्ध किया है और पूरी तरह से लाभ उठाया है, आप भी चाहे तो इस सत्य को परख सकते है।

+++

अपनों से अपनी बात

यह कदम हम नहीं तो और कौन उठायेगा ?

हम जिस युग में सांस ले रहे है, वह संघर्ष, स्वार्थ छल, प्रतिस्पर्धा तथा येन-केन-प्रकारेण अपने अस्तित्व को बचाये रखने का युग है, नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है, मानवीय भावनाओं को ताक पर रख दिया गया है. और अपने आप भौतिकता के कीचड़ में इस प्रकार से लुंज-पुंज हो रहे है कि आंख उठाकर देखने, सोचने और समझने का समय ही नहीं मिल पा रहा है, कुछ क्षणों के लिये हमारे मानस में यह चिन्तन आता भी है कि यह क्या हो रहा है ? हम किस तरफ बढ़ रहे है ? क्या हमारे जीवन का यही श्रेय-प्रेय है? क्या हमारे जीवन की पूर्णता इसी में है ? पर काल संघर्षप्रवाह में दूसरे ही क्षण लिप्त होकर भूल जाते है और उसी संघर्ष, आपाधापी तथा स्वार्थ चक्र में घूमने के लिये विवश हो जाते हैं।

यह युग संक्रान्ति काल है, जिसमे पुरानी सभ्यता के प्रति मोह है, पर नई सभ्यता में लिप्त है, ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं, पर अनास्था की सांस लेकर दुविधाग्रस्त भी है, पूर्वजों के प्रति सम्मान है पर नई पीढी के आगे किंकर्त्तव्य विमूढ़ भी है, हमारे प्राचीन ज्ञान विज्ञान के प्रति ललक है, पर मार्ग दर्शन के बिना हताश निराश और उदास है, हम जानते है कि हम भारतीय है, उस भारत के निवासी है, जो विश्व का सिरमौर था, ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी था, चिन्तन के क्षेत्र में जिसकी समता करने वाला और कोई नहीं था....और इसीलिये हम अपने आपको गौरवशाली समझते है....हमारे पूर्वजों और ऋषि मुनियों की चर्चा होते ही हमारा सीना फूल जाता है, पूर्वजों द्वारा प्रणीत साहित्य, मन्त्र तन्त्र को लेकर आज भी विश्व के सामने गर्वोन्नत मस्तिष्क से खड़े हो पाते है, क्योंकि यह साहित्य शाश्वत और अमर है, यह साहित्य अपने आप मे दुर्लभ और अप्रतिम है, आज विश्व ने अन्य क्षेत्रों में भले ही आश्चर्यजनक प्रगति कर दी हो, पर जर्मनी, जापान प्रभृति अन्य पाश्चात्य देश आज भी मंत्र-तंत्र के क्षेत्र में भारत का लोहा मानने को विवश है, इस क्षेत्र में आज भी वे हमें अग्रणी मानने को बाध्य हैं आज भी इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिये वे हमारी तरफ ताकने को विवश है।

और इसका प्रमाण है विदेशियों के झुण्ड के झुण्ड का भारत की ओर आना, ध्यान, योग-साधना के प्रति दीवानगी की हद तक जाना, हमारे मन्त्र तंत्र-ग्रन्थों का आये दिन चोरी से विदेशों में ले जाना और मन्त्र तन्त्रों की खोज में सब कुछ भूल भुलाकर भटकना......।

पर हम क्या कर रहे है कभी हमने दो क्षण रुक कर सोचा है ? इस भाग दौड़ में दो क्षण सांस लेकर कभी यह विचार किया है कि हम अपने पूर्वजों की थाती को सुरक्षित रखने के लिए क्या कर रहे है ? जब विदेशी प्रतिभाशाली लोग हजारों लाखों मील की यात्रा कर यहां इसके लिए भटक रहे है तब हम अपने घर में बैठे इसके लिए कुछ कर पा रहे है ? नहीं.... कभी नहीं.... कभी नहीं सोचा... कभी सोचने का उपक्रम भी नहीं किया कभी विचार करने को समय ही नहीं मिला......।

और हमारी इस शिथिलता तथा उदासीनता से ही हमारी आंखों के सामने हमारी आगे की पीढी उच्छृंखल होती जा रही है, ईश्वर और धर्म का डटकर मखौल उड़ाया जा रहा है, अनुशासन और नियमों को ताक पर रख दिया है और हमारी विचारधारा दर्शन, चिन्तन, मनन मंत्र-तंत्र आदि के प्रति घृणा के स्तर तक पहुंच गई है और यह सब कुछ हमारी आंखों के सामने हो रहा है, हम हाथ पर हाथ धरे बैठे है, और वे हमारे पूरे इतिहास की धज्जियां उड़ा रहे है, हम निष्क्रिय है और वे हमारे सुदीर्घ चिन्तन, पूर्वजो की थाती तथा मानवीय मूल्यों का उपहास करने में गौरव अनुभव करने लगे है . और यह सब कुछ हमारे सामने हमारी आखो के सामने हो रहा है....क्या इस उदासीनता के लिए आने वाला इतिहास हमें क्षमा करेगा ? आने वाला समय जब पुकार-पुकार कर इन प्रश्नों के उत्तर पूछेगा, तब आपके पास क्या उत्तर होगा ? आप क्या जवाब देगें, आपके पास प्रत्युत्तर देने के लिए रह भी क्या जायेगा ?

आज चारों तरफ उच्छृखलता और नग्नता का बोलबाला है, नई पीढी 'डिस्कों' के प्रति आस्थावान होती जा रही है, घटिया साहित्य से पूरा बाजार भरा पड़ा है, लूटमार, बलात्कार, व्यभिचार और अश्लील साहित्य प्रत्येक के हाथों में है, फिल्मी—पत्रिकाएं उनके मानस में है, हमारे धर्म और साहित्य का जम कर मखौल इन पत्रिकाओं के माध्यम से उड़ाया जा रहा है, और इसी का परिणाम है कि आने वाली पीढ़ी की पकड़ हमारे हाथों से छूटती जा रही है, वह ईश्वर, धर्म और मन्त्र-तन्त्र के प्रति अनास्थावान बनने से दिग्भ्रमित है, विचार शून्य है, परेशान और व्यथित है, पुराना उसके हाथ से छूट गया है, नया उसकी पकड़ में नहीं आ रहा है, और इसीलिए वह त्रिशंकु की भांति दुविधा ग्रस्त है, अश्लील, अनास्थापूर्ण पत्र-पत्रिकाओं ने उसके मानस को आन्दोलित भ्रमित और उच्छृंखल बना दिया है ।

ऐसी स्थिति में अब आपकी आवश्यकता है....अब जरूरत है कि उन्हें मार्गदर्शन दिया जाय, उन्हें श्रेष्ठ साहित्य से परिचित कराया जाय, पूर्वजों के प्रति आस्था पैदा की जाय, मानवीय मूल्यों का ज्ञान दिया जाय और मन्त्र-तन्त्र के प्रति ललक जाग्रत की जाय, उनके सामने जहर का प्याला भरा पड़ा है उसमे अमृत उंडेला जाय, उन्हें सही चिन्तन, सही ज्ञान, सही राह बताई जाय... इस घटाघोप अन्धकार में दीपक जलाया जाय ।

और इसी घटाटोप अन्धकार में मैंने एक दीपक बालने का प्रयत्न किया है, इस निविड़ कालरात्रि में रोशनी की किरण बिखेरने का प्रयत्न किया है, जिसके सहारे लक्ष्य तक पहुंचा जा सके, हम अपने पूर्वजों से, अपने साहित्य से और अपने आप से परिचित हो सके, हमारे हृदय में प्रकाश फैल सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया है ।

इसके पीछे मेरा कोई स्वार्थ नहीं है, आर्थिक दृष्टि से देखा जाय तो इससे कोई लाभ नहीं है, धर्म या यश प्राप्त करने की कोई लालसा नही हैं चिन्तन यही है कि इस ऊहापोह के युग में यदि कुछ भी नहीं किया गया तो क्या होगा ? यदि हम ही कदम नहीं उठायेगें तो कौन उठायेगा ? यदि हम ही रोशनी की किरण नहीं बिखेरेंगे तो कौन बिखेरेगा ?

पर यह मेरे अकेले के बस की बात नहीं है, मुझ अकेले में इतनी सामर्थ्य नहीं है, कि इस गुरूतर भार को वहन कर सकूं, मुझ अकेले में इतनी क्षमता नहीं है, कि तीव्रता से बढ़ सकूं यह आपके सहयोग से संभव है.... आपकी मदद से यह सब कुछ संभव हो सकता है, मैंने यह गुरुतर भार इसलिये उठाया है, कि मेरे पीछे आपकी शक्ति है, आपका संबल और सहारा है आपका विश्वास मेरे साथ है ।

यदि स्वार्थ और धन की कामना ही अभिप्रेत होता तो मैं कोई नया व्यापार प्रारंभ करता, कोई ग्रन्थ लिख डालता, कुछ और कार्य कर डालता....पर नहीं, यह मेरा अभीष्ट नहीं""प्रभु ने मुझे बहुत कुछ दिया है, आप लोगों का स्नेह इतना अधिक मेरे जीवन में है कि किसी प्रकार भी कोई न्यूनता नहीं है"" । मेरा लक्ष्य मेरा, उद्देश्य तो केवल मात्र इतना है कि हम अपनी लुप्त होती हुई संस्कृति को जीवित रख सकें, जो मन्त्र तंत्र समाप्त प्राय: हो रहे है उन्हें प्रकाश में ला सके, सुरक्षित रख सके, दीर्घजीवी बना सके ।

और इसी उद्देश्य से 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका प्रकाशन प्रारंभ किया है, क्योंकि इसके पीछे आपका आग्रह था, मेरे मित्रों स्नेहियों का दबाव था, कि समय रहते यह किया जाय, आप लोगों का स्नेहपूर्ण आग्रह था,

कि इस प्रकार की पत्रिका प्रकाशित की जाय।

पर मैं समझ रहा था, कि इस मंहगाई के जमाने में पत्रिका निकालना कितना कठिन है, जब प्रत्येक वस्तु के भाव आकाश छू रहे हो तब यह साहस करना कितना दुष्कर है, जब हमारे पास साधन सीमित हो निर्णय कर लेना और उसे क्रियान्वित करना कितना चुनौतिपूर्ण है पर मुझे आप सब पर भरोसा था। मुझे विश्वास था, कि आप सब मेरे है, इस शुभ और कर्तव्य पूर्ण कार्य में आपका पूरा पूरा सहयोग मिलेगा।

और मुझे प्रसन्नता है कि आपका सहयोग मिला भी, मेरे आह्वान पर आपने आगे बढ़ कर मुझे जो सहायता दी, वह अप्रतिम है, आप लोगों ने हर मुसीबत में मेरा हाथ बटाने का जो संकल्प दोहराया है वह मेरे लिये आह्लाद कारक है... मुझे आप पर भरोसा है, क्योंकि आप मेरे हैं अपनों से ही तो अपनी बात कही जाती है।

पत्रिका तब सुदृढ़ बनती है जब वह अपने पैरों पर खड़ी हो, मैंने पत्रिका हेतु न तो याचना की है न दान स्वीकार करने की इच्छा रखता हूँ, न विज्ञापन चाहता हूँ और न व्यर्थ की आर्थिक सहायता.... मैं तो आपका स्नेह चाहता हूँ, आपसे सहयोग चाहता हूँ, आपके व्यस्त जीवन में से मात्र चार-छः मिनट पत्रिका के लिये चाहता हूँ।

हम अपने उद्देश्य में तभी सफल हो सकेंगे जब इसके ज्यादा से ज्यादा ग्राहक बन सकेंगें, ज्यादा से ज्यादा लोगों के हाथों में यह पत्रिका होगी, इसके लिए मुझे आपके सहयोग की जरूरत है, मदद की आवश्यकता है, भागदौड़ की जिंदगी में कुछ समय की अनिवार्यता है।

आप प्रयत्न करें कि इसके और ग्राहक बनें, ग्राहक संख्या बढ़ने से ही इस पत्रिका का कलेवर बढ़ सकता है, इसमें ज्यादा और ठोस सामग्री आ सकती है यह अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है, इसके लिये निम्न कार्यों में से आप कुछ कार्य करें—

१. कम से कम दो ग्राहक तो आप बनावें ही, जो नये ग्राहक बनें, वे हमें सूचना दें, कि किनकी प्रेरणा से ग्राहक बनें है।

२. आप स्वयं अपने संबंधियों या रिश्तेदारों के नाम से पत्रिका-शुल्क भेज दें, जिससे कि वे अचानक पत्रिका पाकर चकित हो सकेंगे, हम उन्हें सूचना देंगे, कि किस सज्जन के सहयोग से यह पत्रिका भेजी जा रही है।

३. आप अपने निकटस्थ मित्रों, शुभ चिन्तकों, बुक स्टालों, पत्र-पत्रिका विक्रेताओं को सूचना दे, प्रेरणा दें, जिससे कि वे पत्रिकाएं मंगाकर स्टाल पर रख सकें।

४. अपने मोहल्ले में "मंत्र-संघ" बनायें, जहां सप्ताह में एक दिन एकत्र हों, तथा इसके प्रचार-प्रसार के लिए योजना बनाकर प्रयत्न करें।

पर इसके लिए ज्यादा समय नहीं है, पत्रिका आपके हाथों में है, पत्रिका प्राप्त होते ही प्रयत्न प्रारम्भ कर दें, जिससे कि दो तीन सप्ताह के भीतर-भीतर आपके प्रयत्न रंग ला सकें, और पत्रिका का दूसरा अंक ज्यादा से ज्यादा लोगों के हाथों में पहुँच सके।

यह पत्रिका आपके सामने हैं, जिसे यथा संभव पूर्ण बनाने का प्रयत्न किया है, मौलिक और प्रामाणिक सामग्री देने का प्रयत्न किया है, अगले अंक और ज्यादा पुष्ट, और ज्यादा श्रेष्ठ और ज्यादा निखरकर सामने आयेगे।

पत्रिका प्राप्त होते ही प्राप्ति सूचना दें, सूचित करें कि आपको यह अंक कैसा लगा ? आप इसमें और क्या सुधार चाहते हैं ? किस प्रकार की सामग्री चाहते हैं किस प्रकार का परिवर्तन चाहते हैं, आपकी राय आपके सुझाव... आपका सहयोग मेरे पथ का पाथेय बन सकेगा

आप मेरे है, हम सब परस्पर एक सूत्र में जुड़े हैं अपनों से ही तो सहयोग मांगा जाता हैं, अपनों से ही तो अपनी बात कही जाती हैं....

सहयोग व सुझाव की प्रतीक्षा

(नारायणदत्त श्रीमाली)

"मंत्र-तंत्र-यंत्र-विज्ञान" पत्रिका हेतु अग्रिम सम्मतियाँ

❋ मंत्र तंत्र यंत्र पत्रिका निकाल कर देश के लिये गौरव पूर्ण कार्य करने जा रहे हो, ऐसी पत्रिकाओं का मूल्य, पन्नों के भार की अपेक्षा उसमें निहित सामग्री के आधार पर किया जाता है, प्रत्येक भारतीय इसे घर में रखना गौरवपूर्ण कार्य समझेगा।

....विश्ववन्द्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्द जी

❋ आज भले ही भारतीय, इस प्रकार की सामग्री का मूल्य न समझ सके, पर कल इस पत्रिका के अंक जब दुर्लभ हो जायेंगे, तब वे अनुभव करेंगे, कि इन अंकों का संग्रह कितना आवश्यक, अनिवार्य और संग्रहणीय है।

....किंकर बाबा

❋ इस पत्रिका को प्रकाशित कर, आप काल के भाल पर अमरता का टीका लगाने जा रहे हैं, प्रत्येक भारतीय आपके इस प्रयास में साथ है।

....त्रिजटा अघोरी

❋ पत्रिका में प्रकाशित होने वाली सामग्री देखी कुछ वर्षों बाद ऐसा प्रत्येक अंक सौ रुपये व्यय करने पर भी प्राप्य न हो सकेगा।

....हिरण्मय—दिल्ली

❋ पत्रिका भारतीय जनता के लिये वरदान स्वरूप है. कौन भारतीय होगा जो इस प्रकार के अंक छोड़ना चाहेगा, गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तो यह कल्पवृक्ष के समान है।

... ज्ञान चैतन्य – वशिष्ठाश्रम

❋ गृहस्थ, योगी, साधु सन्यासी, जिज्ञासु, वैद्य, साधक मर्मो के लिए उपयोगी है, पठनीय है, संग्रहणीय है....जो प्रारम्भ से ही इस पत्रिका का संग्रह नहीं कर सकेगा, उसे बाद मे पछताना ही पड़ेगा।

....माँ, योगमाया— कलकत्ता

❋ अनास्था और विषैले वातावरण में यह पत्रिका प्रत्यक गृहस्थ के घर मे मधुर आस्था का संगीत गुंजरित करेगी, घर के बालकों पर स्वस्थ प्रभाव पड़ सकेगा।

....कल्पना जोशी – पटना

❋ जोधपुर प्रवास में मैंने पत्रिका के कुछ अंश प्रकाशित देखे थे, आप स्वस्थ वातावरण बनाने मे रत हैं, मैं तीस पत्रिकाओं का शुल्क भेज रहा हूँ, तीस परिवारों को प्रतिमाह यह पत्रिका भेजने का व्रत लेता हूँ, क्योंकि यहां सामाजिक काय है, धार्मिक कार्य है नैतिक कार्य है।

....हीरालाल भुवालका—बबई

प्रारम्भ से ही ग्राहक बनिये, स्थायी ग्राहक बनिये। यह पत्रिका आपके लिए, आपके परिवार के लिए अमृत-तुल्य सिद्ध होगी।